04 -जीवन से जुड़ी आजीविका

05 - हेलीकॉप्टर से चार दिन में पहाड़ों के चार धाम

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 16 नवंबर, 2024

06 - मां ताप्ती की चुनरी पद यात्रा में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

07- कविता में मन को स्वस्थ रखने की जादुई ताकत

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-77 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

महाराष्ट्र : हर एक पार्टी बाकी पांच को क्यों नीचे देखना चाहती है?

डीके सिंह

जब राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख अपने चुनाव अभियान पर निकलने वाले थे, तो उन्हें अपने एक अभियान प्रबंधक से सलाह मिली- 'क्या आपने कभी ऐसा सोचा कि किसी ने आपको मुस्कुराते हुए नहीं देखा? अखबारों और टीवी पर आपकी सभी तस्वीरें गुस्से और क्रोध से भरी हुई हैं। आपको मुस्कुराना और हंसना चाहिए।' ऐसा लगता है कि अजित पवार ने इसे गंभीरता से लिया है। आजकल वे हमेशा मुस्कुराते रहते हैं, हालांकि, हंसी अभी भी नहीं दिखती है। जो व्यक्ति हमेशा सफेद कपड़ों में दिखता रहा है, उसे गुलाबी जैकेट पहनकर आईने के सामने कुछ अजीब लगता होगा। उनकी पार्टी गुलाबी रंग में रंग गई है, जो स्त्रीत्व से जुड़ा रंग है। यह संभावित रूप से खेल बदलने वाली लाडकी बहीण योजना का श्रेय लेने के उनके दावों से मेल खाता है।

नवाब मलिक के लिए उनके निर्वाचन क्षेत्र मानखुर्द शिवाजी नगर में प्रचार करना पवार के लिए पहली बार था। मलिक 2014 से एनसीपी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं, लेकिन अजित पवार कभी भी उनके निर्वाचन क्षेत्र में प्रचार करने नहीं आए। पवार कभी भी लोगों के व्यक्ति नहीं रहे। वे हमेशा कार्यकर्ताओं और नेताओं के लिए मौजूद रहते थे। वे हर संभव तरीके से उनकी मदद करते थे, लेकिन वह काम तक सीमित रहता है।

महाराष्ट्र में अजित पवार का नया रूप देखने को मिल रहा है। वे मझे हुए सौदेबाज भी साबित हुए हैं। एनसीपी की सहयोगी भारतीय जनता पार्टी वडगांवहेरी सीट चाहती थी। उसका कहना था कि मौजूदा एनसीपी विधायक सुनील टिंगरे को पुणे पोर्श दुर्घटना मामले में पुलिस के काम में कथित हस्तक्षेप के लिए जनता की आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। पवार ने वह सीट देने से मना कर दिया। भाजपा, जिसने एनसीपी विधायक नवाब मलिक पर अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम से संबंध रखने का आरोप लगाया था, एनसीपी द्वारा उन्हें मानखुर्द शिवाजी नगर से मैदान में उतारने का विरोध कर रही थी। अजित पवार ने कुछ नहीं सुनी। अब भाजपा ने मलिक के लिए प्रचार नहीं करने का फैसला किया है।

इस कठिन सौदेबाजी के अंत में पवार को 57 सीटें मिलीं। चुनावों में उनकी पार्टी के स्ट्राइक रेट के बावजूद यह उन्हें ड्राइवर की सीट पर बिठाने के लिए पर्याप्त नहीं है। महायुति में उनके कई सहयोगी उन्हें राजनीतिक रूप से 'कमज़ोर' मानते हैं। सेना के एक पदाधिकारी ने मुझे बताया कि वे महायुति की कुल सीटों को कम कर सकते हैं। वे सत्तारूढ़ गठबंधन में 'वैचारिक रूप से अनुपयुक्त' भी हैं, जिन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 'बटेंगे तो कटेंगे' नारे पर सार्वजनिक रूप से अपनी आपत्ति जताई है।

अजित पवार खेमा अपनी पार्टी की संभावनाओं को लेकर उत्साहित है। पार्टी के रणनीतिकारों का दावा है कि एनसीपी को 30 से ज़्यादा सीटें मिलने की संभावना है, साथ ही उन्होंने कहा कि अगर बीजेपी और शिवसेना सरकार बनाती हैं तो यह उन्हें उनके लिए अपरिहार्य बना देगा। भले ही सीटें कम हों और बीजेपी-सेना को सरकार बनाने के लिए उनकी ज़रूरत न हो, लेकिन अजित पवार के एक वफादार ने मुझे बताया कि 'वे उन्हें नहीं छोड़ सकते और पूरी शुगर बेल्ट को अगली सरकार में प्रतिनिधित्व से वंचित नहीं छोड़ सकते।' एनसीपी नेताओं को कम से कम यही उम्मीद है। उनके अनुसार, सबसे अच्छा परिदृश्य तब होगा जब बीजेपी और एकनाथ शिंदे की शिवसेना औसत से कम प्रदर्शन करें और अगली सरकार बनाने के लिए उन्हें एनसीपी की ज़रूरत हो।

यह हमें इस महाराष्ट्र चुनाव के सबसे दिलचस्प पहलू पर ले आता है। दो प्रमुख गठबंधन हैं जिनमें से प्रत्येक में तीन घटक हैं। पहली नज़र में महायुति बनाम महा विकास आघाड़ी (एमवीए) के बीच का संघर्ष लगता है। थोड़ा आगे बढ़िए और आप देखेंगे कि इन छह में से प्रत्येक अन्य पांच के मुकाबले कैसे खड़े हैं।

सेना के नेताओं से पूछिए। वे भाजपा की फिर से अपना मुख्यमंत्री बनाने की महत्वाकांक्षा को जानते हैं। भाजपा 148 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। अगर वह 90 या 100 के आसपास भी जीतती है, तो इस बार वे मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ने वाले नहीं हैं। शिंदे का एक और कार्यकाल आने वाले लंबे समय तक बीजेपी को पीछे कर देगा- ऐसा कुछ जो उसने 2014 तक किया। भाजपा के लिए यह काफी सरल है। दो शिवसेना और दो एनसीपी में से एक-एक को अपने पक्ष में कर लो और यह केवल समय की बात है कि आप अन्य दो को पूरी तरह से नहीं तो काफी हद तक खत्म कर दो। भाजपा को बस 60 प्रतिशत स्ट्राइक रेट चाहिए और वह फिर से एक मजबूत स्थिति में आ जाएगी।

इसलिए शिंदे को तय करना होगा कि उनकी पार्टी 80 सीटों में से अधिकतम सीटें जीत जाए, ताकि वह भाजपा के लिए अपरिहार्य बन जाएं। भले ही भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरे, लेकिन शिवसेना की अपरिहार्यता शिंदे को सीएम की कुर्सी पर फिर से कब्ज़ा करने के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी। फिर वे दूसरी शिवसेना को खत्म करने और अपनी विस्तार योजनाओं को आगे बढ़ाने की उम्मीद कर सकते हैं। अनिवार्य रूप से, यह महायुति के प्रत्येक घटक के हित में है कि दूसरे को कमतर प्रदर्शन करते हुए देखें - एमवीए को कोई भी मौका न देने के लिए पर्याप्त है।

अब विपक्षी खेमे पर नज़र डालते हैं। कांग्रेस 102 सीटों पर चुनाव लड़ रही है, शिवसेना (यूबीटी) 96 और एनसीपी (एसपी) 86 सीटों पर। यह कांग्रेस के लिए सबसे कम है, जिसे 2024 के हरियाणा चुनावों में झटके के बाद महाराष्ट्र में अपने सहयोगियों के आगे झुकना पड़ा। मुंबई में भाजपा के एक वरिष्ठ रणनीतिकार ने बताया, 'कांग्रेस को ज़्यादा मुखर होना चाहिए था क्योंकि कांग्रेस के वोटरों के हस्तांतरण की वजह से ही उद्धव की सेना को लोकसभा में नौ सीटें मिली थीं। कांग्रेस ने कम से कम 35 जीतने लायक सीटें उनके (सहयोगियों) सामने छोड़ दीं।' वैसे भी, भाजपा और कांग्रेस 76 सीटों पर सीधे मुकाबले में हैं, जिनमें से लगभग आधी विदर्भ क्षेत्र में हैं।

अगर उद्धव ठाकरे को फिर से सीएम की कुर्सी पर बैठने की उम्मीद है, तो वह 2019 जैसे नतीजों पर नज़र रखेंगे- शिवसेना 56, एनसीपी 54 और कांग्रेस 44। अन्य दो को भी ऐसी ही उम्मीदें होंगी। वे चाहेंगे कि महायुति खराब प्रदर्शन करे, लेकिन इतना भी खराब नहीं कि एमवीए के तीनों घटक दलों में से किसी को भी संख्या के मामले में कोई महत्वपूर्ण स्थान मिल जाए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

प्रधानमंत्री मोदी ने बिहार को फिर दी

करोड़ों के प्रोजेक्ट की बड़ी 'सौगात'

- जनजातीय गौरव कार्यक्रम में हुए शामिल,की 6 हजार 640 करोड़ के प्रोजेक्ट्स की शुरुआत

जमुई (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी तीन दिन में दूसरी बार बिहार आए। जमुई के बल्लोपुर में शुक्रवार को वो भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए। पीएम ने बिरसा मुंडा के नाम पर 150 रुपए का सिक्का और 5 रुपए का स्मारक डाक टिकट जारी किया है। पीएम ने ये स्मारक सिक्का और डाक टिकट बिरसा मुंडा के वंशज को भेंट भी किया। इस दौरान पीएम ने 6,640 करोड़ रुपए से अधिक की योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इसके अलावा दो जनजातीय फ्रीडम फाइटर म्यूजियम और दो जनजातीय रिसर्च सेंटर का उद्घाटन भी किया। नीतिश कुमार के बाद पीएम मोदी मंच पर पहुंचे। करीब 40 मिनट के भाषण में प्रधानमंत्री ने आदिवासियों पर फोकस किया। परिवारवाद और आदिवासियों की अनदेखी को लेकर पिछली सरकारों को घेरा। नीतिश कुमार की तारीफ भी की।

- हमारी सरकार ने आदिवासी कल्याण मंत्रालय बनाया- पीएम ने कहा कि पहली बार अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में ही अलग से आदिवासी कल्याण मंत्रालय बना। पहले आदिवासियों के लिए 25 हजार करोड़ से भी कम का बजट था। हमारी सरकार ने इसे 5 गुना बढ़ाकर सवा लाख करोड़ तक पहुंचाया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने आदिवासी विरासत को संरक्षित करने के लिए कई कदम उठाए हैं। आदिवासी कला और संस्कृति के लिए समर्पित कई लोगों को पद्म आदिवासी कला और संस्कृति के लिए समर्पित कई लोगों को पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। हमने रांची में भगवान बिरसा के नाम पर एक विशाल संग्रहालय शुरू किया है। आज श्रीनगर और सिक्किम में दो आदिवासी अनुसंधान केंद्रों का भी उद्घाटन किया गया है। पीएम ने कहा कि एनडीए सरकार ने लेह में नेशनल सोवा रिग्पा, अरुणाचल में नॉर्थ ईस्टर्न इंस्टीट्यूट स्थापित किया।

बिरसा मुंडा जयंती पर शहडोल में वर्चुअली जुड़े पीएम मोदी

जनजातीय गौरव दिवस इतिहास के एक बहुत बड़े अन्याय को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास

भोपाल। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पूरे देश में राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनायी जा रही है। जनजातीय गौरव दिवस इतिहास के एक बहुत बड़े अन्याय को दूर करने का एक ईमानदार प्रयास है। आजादी के बाद जनजातीय वर्ग के योगदान को इतिहास में वह स्थान नहीं दिया गया, जिसके लिये वे हकदार थे। जनजातीय समाज वो है, जिसने राजकुमार राम को भगवान बनाया। भारत की संस्कृति और आजादी के रक्षा के लिये सैकड़ों वर्षों की लड़ाई का नेतृत्व दिया। आजादी के बाद के दशकों में जनजातीय वर्ग के अनमोल योगदान को मिटाने की कोशिश की गई। इसके पीछे स्वार्थ भरी राजनीति थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि जनजातीय समाज के समग्र कल्याण के लिये अनेक

योजनाएँ संचालित कर उनके आर्थिक और सामाजिक विकास का कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर बिहार जिले के जमुई में आयोजित राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस पर संबोधित कर रहे थे। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती पर 6 हजार करोड़ रूपये से अधिक की परियोजनाओं का लोकार्पण किया गया है। इसमें जनजातीय वर्ग के बच्चों के भविष्य को संवारने वाले स्कूल और हॉस्टल, जनजातीय वर्ग की महिलाओं के लिये स्वास्थ्य सुविधा, जनजातीय क्षेत्रों को जोड़ने वाली सैकड़ों किलोमीटर की सड़कें, जनजातीय वर्ग की संस्कृति को समर्पित संग्रहालय एवं जनजातीय वर्ग के डेढ़ लाख परिवारों को पक्के घर के स्वीकृति पत्र वितरित किये गये हैं। साथ ही आज देव दीपावली के दिन 11 हजार से अधिक जनजातीय परिवारों को अपने घर में प्रवेश कराया गया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा के श्री बादल भोई जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय एवं जबलपुर के राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह स्वंतत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय का वर्चुअली लोकार्पण किया।

जनजातीय कल्याण के लिये राज्य सरकार कर रही है बेहतरीन कार्यः राज्यपाल

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सम्पूर्ण देश में जनजातीय कल्याण के अभूतपूर्व कार्य किए जा रहे हैं। पीएम जन मन योजना और सिकल सैल उन्मूलन मिशन, जनजाति कल्याण का महाभियान है। इस महाभियान में राज्य सरकार द्वारा जनजाति कल्याण के बेहतरीन कार्य किए जा रहे हैं। अनेक विभागों के माध्यम से अति पिछड़ी जनजातियों को विकास की मुख्यधारा में लाने के कारगर प्रयास लगातार जारी है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सिकल सैल उन्मूलन मिशन का संकल्प मध्यप्रदेश की धरती से लिया जाना प्रदेश के लिए सौभाग्य की बात है। केंद्र और राज्य सरकार के द्वारा सिकल सैल उन्मूलन की दिशा में जाँच और जागरूकता के कार्य सघन स्तर पर किए जा रहे हैं।

जल, जंगल और जमीन का अधिकार जनजातीय समाज का है मूल अधिकार : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जल, जंगल और जमीन का अधिकार जनजातीय समाज का मूल अधिकार है। इसे अंग्रेज उनसे छीनना चाहते थे। भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के अत्याचार, अनाचार के खिलाफ जनजातीय समाज को खड़ा किया और अंग्रेजों के खिलाफ दो स्तरों पर लड़ाई लड़ी। एक ओर उन्होंने जनजातीय समाज के मूल अधिकार की रक्षा की और दूसरी ओर ईसाई मिशनरियों द्वारा हमारे धर्म के साथ छेड़छाड़ कर हमारे जनजातीय भाइयों को ईसाई बनाने के कुत्सित प्रयासों को ध्वस्त किया। आज हम भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर उन्हें हृदय से स्मरण और नमन करते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास को देश के समक्ष लाने का अभियान चलाया है। उन्होंने प्रतिवर्ष देश भर में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस मनाने का निर्णय मध्यप्रदेश में ही लिया। आज पूरे देश में भगवान बिरसा मुंडा जयंती मनाई जा रही है। भगवान बिरसा मुंडा का जीवन हम सबके लिए मार्गदर्शक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में जनजाति गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहे हैं। आज महान जनजाति नायक श्री बादल भोई और श्री शंकर शाह रघुनाथ शाह के संग्रहालय का लोकार्पण किया गया है। टंट्या मामा भील मालवा क्षेत्र के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। प्रदेश में खरगोन के नए विश्वविद्यालय का नाम क्रांतिवीर टंट्या मामा विश्वविद्यालय रखा जा रहा है। महू के पास रेलवे स्टेशन का नामकरण भी उनके नाम पर किया गया है। प्रदेश में कोदो, कुटकी को प्रोत्साहित करने के लिए रानी दुर्गावती योजना चलाई जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय समाज आज भी हमारी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखे है। भगवान श्रीराम के रावण के विरुद्ध संघर्ष में जनजातीय समाज ने सहयोग किया। भगवान श्रीकृष्ण मोर पंख धारण करते थे, जनजातीय समाज भी मोर पंख धारण करता है।

राजस्थान थप्पड़कांड

कलेक्टर का वादा, ग्रामीणों की सभी मांगें पूरी होंगी

टोंक (एजेंसी)। राजस्थान के देवली-उनियारा (टोंक) में एसडीएम के थप्पड़कांड विवाद में जिला कलेक्टर डॉ सौम्या झा का पहला बयान सामने आया है। उन्होंने समरावता गांव में ग्रामीणों से कहा कि आचार संहिता के सभी मांगें पूरी होंगी। उन्होंने कहा कि बुधवार को हुए विवाद से पहले उन्होंने नरेश मीणा को 6 बार कॉल किया था, लेकिन उन्होंने बात नहीं की। जिला कलेक्टर के साथ एसपी विकास सांगवान भी मौजूद थे। दोनों अधिकारियों ने गांव का जायजा भी लिया। वहीं, टोंक के निवाई में दोपहर तीन बजे नरेश मीणा की कोर्ट में पेशी होगी।

सुप्रभात

नज़रें बदल गईं तो
नज़ारे बदल गये।
अपने थे जो कल तक
वो हमारे बदल गये।

आंखों से जो गिरे वो
हथेली पे आ गये।
अश्कों के मेरे सारे
सहारे बदल गये।

हाथों की लकीरों पे था
मुझको यक़ीन कब।
हाथों की मेहनतों से
सितारे बदल गये।

हम थे जो कभी इस
तरफ़ उस पार रहे तुम।
बस दरिया बीच में था
किनारे बदल गये।

जिनको चुना था मैने भी
हसरत के साथ में।
एक दिन वो फूल शोलों
में सारे बदल गये।

हमको जो खींच लेते
ही थे दूर से कभी।
उनकी नज़र के अब वो
इशारे बदल गये।

गुंजन वो याद करके
भला पाइयेगा क्या।
मंज़र जो दिलनशीं थे
वो सारे बदल गये।

– गोविन्द गुंजन

पत्नी नाबालिग है तो सहमति से संबंध भी माना जाएगा रेप

हाईकोर्ट ने सुनाया बड़ा फैसला,यह माना जाएगा अपराध

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाईकोर्ट ने नाबालिग पत्नी के साथ सेक्स के मामले में अहम फैसला सुनाया है। कोर्ट ने कहा कि नाबालिग पत्नी के साथ सहमति के साथ भी संबंध नहीं बनाए जा सकते हैं। कोर्ट का कहना है कि ऐसे मामलों में पति के खिलाफ रेप का मामला चलाया जाएगा। हाईकोर्ट ने एक मामले में दोषसिद्धि को बरकरार रखा है। दोषी का तर्क था कि पीड़िता के साथ यौन संबंध सहमति से बनाए गए थे और उस समय वह उसकी पत्नी थी। आरोपी का कहना था कि उसके खिलाफ बलात्कार का मामला नहीं चलाया जाना

चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार हाईकोर्ट की नागपुर बेंच में जस्टिस गोविंद सनप ने एक मामले में सुनवाई की। कोर्ट ने कहा कि कानून के मद्देनजर यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती कि अपीलकर्ता का पीड़ित पत्नी के साथ यौन संबंध बनाना बलात्कार या यौन हिंसा नहीं माना जाएगा। कोर्ट ने साफ कहा कि अगर लड़की की उम्र 18 साल से कम है फिर चाहे वह उसकी पत्नी ही क्यों ना हो, उसके साथ सेक्स बलात्कार माना जाएगा। 25 मई 2019 को एक शख्स को बलात्कार के मामले में गिरफ्तार किया गया। एक नाबालिग लड़की ने उस पर रेप का आरोप लगाया था। इस मामले में 9 सितंबर 2021 को वर्धा जिले के ट्रायल कोर्ट ने दोषी पाया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 16 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

वायनाड लैंडस्लाइड नहीं घोषित होगी राष्ट्रीय आपदा

केंद्र का इनकार

नई दिल्ली/वायनाड (एजेंसी)। केंद्र ने वायनाड लैंडस्लाइड को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने से इनकार कर दिया है। इसको लेकर 10 नवंबर को गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने केरल सरकार को लेटर लिखा। इसमें उन्होंने कहा कि मौजूदा दिशा-निर्देशों के तहत किसी भी आपदा को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने का कोई

प्रावधान नहीं है। अगस्त में राज्य सरकार ने प्रधानमंत्री मोदी को पत्र लिखकर वायनाड लैंडस्लाइड को राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की मांग की थी। इसके अलावा राहुल गांधी ने भी 7 अगस्त को लोकसभा में यही मांग की थी। दरअसल, वायनाड में 29 जुलाई की रात करीब 2 बजे गांवों में लैंडस्लाइड हुए थे।

हम बंटे थे इसलिए तो पाक और बांग्लादेश बना: योगी

एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी विधानसभा चुनाव की वोटिंग में अब सिर्फ 5 दिन बचे हैं। सीएम योगी ने गुरुवार को झारखंड में बटेंगे तो कटेंगे बयान दोहराया। कहा- बंटे तो कांग्रेस, झामुमो व राजद जाति के नाम पर मुंडा को संथाल, पासवान को मुसहर से लड़ाएगी। हम बंटे थे तो

पाकिस्तान व बांग्लादेश बन गया। इसलिए एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे। योगी ने कहा- हम छेड़ेंगे नहीं, पर छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं। ये लोग बेटी की इज्जत के साथ खिलवाड़ करेंगे। आपके रोजगार पर डाका डालकर रोटी की समस्या खड़ी करेंगे। लव जिहाद से आपकी जमीन पर कब्जा करेंगे। हम हरगिज यह सब नहीं होने देंगे। ये सभी एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। इधर, चुनाव आयोग को पत्र लिखकर सपा के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल ने सरकार पर गंभीर आरोप लगाए।

महाराष्ट्र के हिंगोली में अमित शाह के बैग की जांच

इलेक्शन कमीशन के अधिकारियों ने की चेकिंग

हिंगोली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के हिंगोली में इलेक्शन कमीशन अधिकारियों ने गृह मंत्री अमित शाह के बैग की जांच की। यह घटना

उद्धव ठाकरे के बैग की जांच को लेकर उठे राजनीतिक विवाद के बीच हुई है। उद्धव ठाकरे के बैग की सोमवार को यवतमाल जिले में और मंगलवार को लातूर में दो बार जांच की गई थी। अमित शाह एक्स पर वीडियो शेयर करते हुए इसकी जानकारी दी। उन्होंने वीडियो शेयर करते हुए इसका जिक्र किया।

पीओके में नहीं जाएगी ट्रॉफी...आईसीसी का इनकार

टूर्नामेंट से पहले पाकिस्तान को बड़ा झटका, भारत का दिखा पावर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी पाकिस्तान में आयोजित की जाएगी या नहीं अभी इस बात पर विवाद है, जबकि दूसरी ओर पाकिस्तान ने पूरे देश में ट्रॉफी घुमाने का ऐलान कर दिया था। इस पर अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) एक्शन लेते हुए उसे पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर यानी पीओके के तीन शहरों में ट्रॉफी ले जाने से मना कर दिया है। बता दें कि भारत ने टीम को चैंपियंस ट्रॉफी खेलने के लिए पाकिस्तान भेजने से मना कर दिया है। इसके बाद माना जा रहा है कि अगर पाकिस्तान तैयार होता है तो टूर्नामेंट हाईब्रिड मॉडल से खेला जाएगा, यानी भारत के सभी मैच पाकिस्तान से बाहर होंगे, जबकि फाइनल भी पाकिस्तान में नहीं खेला जाएगा। इस बीच पाकिस्तान ने एक दिन पहले ही ट्रॉफी अपने देश में घुमाने का ऐलान किया था। इस पर आईसीसी हरकत में आ गई है। दूसरी ओर, आईसीसी ने

आईसीसी ने पीओके के तीन शहरों में ट्रॉफी ले जाने से किया मना

अभी चैंपियंस ट्रॉफी के अंतिम कार्यक्रम की घोषणा नहीं की है, लेकिन उसने 16 नवंबर से शुरू होने वाले देश के दौरे के लिए ट्रॉफी पाकिस्तान भेजी। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के एक अधिकारी के अनुसार ट्रॉफी का दौरा उत्तरी पाकिस्तान के स्कार्दू से शुरू होगा। अधिकारी ने कहा, 'यह दौरा उन प्रमुख पाकिस्तानी शहरों से होकर गुजरेगा जहां चैंपियंस ट्रॉफी के मैच खेले जाने हैं।' ट्रॉफी ऐसे समय में पहुंची है जब आईसीसी ने भारत द्वारा टूर्नामेंट के लिए देश की यात्रा करने से इनकार करने के बाद 'हाइब्रिड मॉडल' में प्रतिष्ठित टूर्नामेंट की मेजबानी करने पर पीसीबी से जवाब मांगा है। ट्रॉफी का अनावरण इस महीने की शुरुआत में लाहौर में होना था। लेकिन भारत के आईसीसी को सूचित किए जाने के बाद कि वह अपनी टीम पाकिस्तान नहीं भेजेगा और शहर में धुंध की स्थिति के कारण यह समारोह स्थगित कर दिया गया।

हो जाएं तैयार, आ रही है कंपकंपाने वाली ठंड!

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर भारत में तापमान में धीरे-धीरे कमी आ रही है। अब मौसम विभाग ने बताया है कि उत्तर पश्चिम, मध्य, पूर्वी और पश्चिमी भारत में अगले पांच दिनों में न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की जाएगी। यानी कि ठंड आने वाली है। बिहार, पंजाब, हरियाणा, उत्तर पश्चिम राजस्थान में अगले दो दिनों तक सुबह और रात के समय घने से बहुत घना कोहरा देखने को मिलने जा रहा है। इसके साथ ही, उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाकों में भी अगले दो दिनों तक बहुत घना कोहरा पड़ने की चेतावनी जारी की गई है। पिछले 24 घंटे के मौसम की बात करें तो केरल, तमिलनाडु में भारी बारिश हुई।

इसके अलावा, पंजाब, हरियाणा में घना कोहरा छाया। साथ ही, चंडीगढ़, पूर्वी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी घना कोहरा देखने को मिला। बारिश की बात करें तो दक्षिण भारत में 15-17 नवंबर के बीच हल्की से मध्यम बारिश होगी। साथ ही, आंधी तूफान व बिजली कड़कने की भी चेतावनी जारी की गई है। वहीं, जम्मू-कश्मीर, उत्तरी पंजाब के इलाकों में आज हल्की बारिश होगी। तमिलनाडु, कराईकल, तटीय आंध्र प्रदेश, रायलसीमा में 15 नवंबर, केरल, माहे में 15 और 16 नवंबर को तेज बारिश देखने को मिलेगी। पंजाब, हरियाणा, बिहार में 17 नवंबर की सुबह तक, पूर्वी उत्तर प्रदेश में 16 नवंबर की सुबह तक घने से बहुत घना कोहरा देखने को मिलेगा।

बच्चों को कपड़े एवं खिलौने वितरित किए

राउंड टेबल एवं लेडीज सर्किल द्वारा सर्विस वीक का आयोजन

इन्दौर। राउंड टेबल इंडिया एवं लेडीज सर्किल इंडिया के इंदौर यूनाइटेड राउंड टेबल एंड इंदौर यूनाइटेड लेडीज सर्किल द्वारा दिवाली के पूर्व से चलाई जा रही डोनेशन ड्राइव से जुटाए गए उच्च वर्ग के खिलौने एवं कपड़ों को वितरण हेतु डोनेशन ड्राइव की गई। संस्था के दिव्यांशु गोयल एवं श्रुति माहेश्वरी ने बताया कि हमारी संस्थाएं शिक्षा के क्षेत्र में 26 वर्षों से कार्यरत होकर इंदौर में ही अब तक लगभग 10 से ज्यादा स्कूलों में 50 से अधिक क्लासरूम्स बनवा चुकी हैं एवं हर वर्ष कई सारे समाज सेवी कार्य करती हैं एवं अपने उत्कृष्ट कार्यों हेतु जानी जाती हैं। अपने फ्रीडम थ्रू एजुकेशन स्कीम के तहत शासकीय स्कूलों को गोद लेकर नए सुसज्जित एवं आधुनिक क्लासरूम निर्मित करती हैं एवं महिलाओं के लिए विशेष क्लासरूम निर्मित करती हैं जिससे लाखों बच्चे लाभान्वित होते हैं।

नगर के खेल मैदान बना दिए गए मजाक..

नर्मदापुरम। संभागीय मुख्यालय पर पुलिस परेड ग्राउंड को छोड़कर अब एक भी ऐसा व्यवस्थित मैदान नहीं बचा जिसे खेल के लिए उपयोग किया जा सके। नगर में खेल प्रतिभाओं को उभरने का मौका मिल पाना खत्म हो गया। जबकि खेल प्रतिभाओं को उभारने के लिए शिक्षक और खेल प्रेमी पहले जी जान लगा देते थे। कक्का जी के नाम से प्रसिद्ध पंडित रामलाल शर्मा की नजरें तो खिलाड़ियों को महाविद्यालय की ओर से टूर्नामेंट खिलाने के लिए हमेशा तलाशती थी। खेल प्रतिभाओं को उभारने के लिए उस दौर में कितना सम्मान और कितनी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती थी यह उस दौर अब बुजुर्ग हो चुके खिलाड़ियों से पता चलता है। लेकिन वो सब बातें कल की हो गई। शिक्षा के कुछ केंद्र छोड़कर तो शिक्षा केन्द्रों में मैदान तक उपलब्ध नहीं हैं जबकि बच्चों के शारीरिक विकास के लिए मैदानी खेल कितने महत्वपूर्ण होते, किताबी ज्ञान तक सीमित रह गया। खेल और खेल मैदान दोनों उपेक्षित कर दिए गए। खेल और खेल मैदान जबकि नगर की शान कहलाते थे। ऐसा नहीं कि नगर में खेल मैदान नहीं एक से बढ़कर एक खेल मैदान और खेल प्रतिभाएं नगर में उपलब्ध है लेकिन जिम्मेदारों ने ही इन मैदानों को कमाई का साधन बना लिया या नवाचार के साधन.. ताज्जुब तो इस बात को लेकर किया जाना चाहिए कि खेल मैदानों को लेकर न तो प्रशासन को कोई फिक्र है, न खेल प्रेमियों को, न जिला शिक्षा अधिकारी को फिर लिखने में गुरेज नहीं कि इस ओर सबसे ज्यादा गैर जिम्मेदारी के लिए विधायक

जबावदार ठहराएं जा सकते हैं। जिन्होंने खेल और खेल प्रतिभाओं सहित खेल मैदानों को खत्म करने का बीड़ा उठा रखा। कुछ दिन पहले ही आध्या तिवारी टेनिस में खिताब लेकर नगर क्या आई उसके सम्मान और गाड़ी में बैठने फोटो सेशन सहित सब जुलूस की शक्ल में भीड़ बनने और बनाने को तैयार दिखाई दिए। ऐसा ही हर्षिता तोमर जब तैराकी मैडल हासिल कर नगर आई उसे भी हाथों-हाथ लेने के लिए लोग रेलवे स्टेशन पहुंच गए। आखिर इन दोनों खिलाड़ियों से किसी ने नहीं पूछा इस मुकाम तक पहुंचने में नगर और नगरवासियों का कितना सहयोग पाया..? आध्या जिस टेनिस मैदान पर प्रेक्टिस करती थी आज वह जरजर हो गया पिता ने अपना केरियर छोड़कर मुकाम पर पहुंचाया नगर को गर्व है लेकिन नगरवासियों सहित जिम्मेदारों का इसमें कितना योगदान.? हर्षिता तोमर के मामले में भी उसके माता-पिता की भूमिका अहम है। पहले यहां खेलों के कल्ब हुआ करते थे और अब अकादमी.. आखिर खेल और खेल प्रतिभाओं सहित खेल मैदानों की इतनी उपेक्षा क्यों.? हर स्कूल खेल फीस पालक से तो वसूलते हैं और नियमानुसार शिक्षा विभाग इस फीस का हिस्सा.. फिर खेल मैदान, खेल प्रतिभाओं सहित खेल के प्रति इतनी अरुचि क्यों। नगरपालिका ने गुप्ता ग्राउंड की चारों तरफ दुकान बना डाली और मैदान को किराए पर देकर खिलाड़ियों को खदेड़ दिया। एस एन जी स्टेडियम सरकारी है कलेक्टर ने उसे नवाचार का मैदान और नर्मदा शिक्षा समिति ने लावारिस बना दिया उधर गवर्नमेंट स्कूल के खेल मैदान पर अधूरा होस्टल बनाकर मैदान कबाड़ कर दिया ऐसा क्यों..?

एक दिन पाकिस्तान पर भी लहराएंगे भारत का तिरंगा

- देवेंद्र फडणवीस बोले-7 दशक बाद उमर अब्दुल्ला ने ली भारत के संविधान की शपथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव होने में महज कुछ ही दिन का समय बचा हुआ है। इससे पहले राज्य के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि हम एक दिन अखंड भारत बनाएंगे और एक दिन भारत का तिरंगा पाकिस्तान पर भी लहराएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि उमर अब्दुल्ला ने भी सात दशकों के बाद पहली बार मुख्यमंत्री के तौर पर भारत के संविधान की शपथ लेनी पड़ी। समाचार एजेंसी पर स्मिता प्रकाश ने डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस से कश्मीर के मुद्दे पर सवाल किया तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि कश्मीर का मामला महाराष्ट्र के चुनावों में क्यों नहीं उठेगा। यह मराठाओं की भूमि है। ये संकुचित विचारों वाली भूमि नहीं है। अगर मैं देशभक्त हूं, तो मैं इतना संकीर्ण सोच कैसे रख सकता हूं।

डेढ़ घंटे तक रोका गया राहुल का हेलीकॉप्टर, मचा बवाल

बोकारो/गोड्डा (एजेंसी)। झारखंड के गोड्डा में चुनावी सभा के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी का हेलीकॉप्टर डेढ़ घंटे तक रुका रहा। बताया जा रहा है कि एयर ट्रैफिक कंट्रोल से गोड्डा के बेलबड्डा से हेलीकॉप्टर को उड़ान भरने की अनुमति नहीं मिली थी। पूरी घटना के दौरान राहुल गांधी हेलीकॉप्टर में ही बैठे रहे और मोबाइल देखते रहे। महगामा क्षेत्र से विधायक और कांग्रेस कैंडीडेट दीपिका पांडे सिंह ने कहा कि हेलीकॉप्टर को सिर्फ इसलिए रोका गया कि प्रधानमंत्री देवघर में हैं। राहुल गांधी को उस क्षेत्र से गुजरने की अनुमति नहीं दी गई। प्रोटोकॉल है, जिसे हम समझते हैं लेकिन कांग्रेस ने 70 वर्षों तक देश पर शासन किया और किसी भी विपक्षी नेता के साथ ऐसी घटना कभी नहीं हुई।

दिल्ली में हवा बेहद जहरीली, 5वीं तक स्कूल बंद

हरियाणा, यूपी और राजस्थान की बसों पर लगी रोक, अमेरिकी सैटेलाइट से भी दिखा प्रदूषण

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में प्रदूषण गुरुवार को बेहद खतरनाक स्तर पर पहुंच गया। यहां 39 पॉल्यूशन मॉनिटरिंग स्टेशंस में से 32 ने एयर क्वालिटी इंडेक्स को गंभीर बताया है। इस हवा में सांस लेना भी मुश्किल होता है। यहां सभी प्राइमरी (5वीं क्लास तक) स्कूलों में छुट्टी कर दी गई है। बच्चे ऑनलाइन क्लास में पढ़ेंगे। एयर कमीशन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट ने एनसीआर यानी हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान से आने वाली बसों के दिल्ली आने रोक लगा दी है। सीएनजी और इलेक्ट्रिक व्हीकल के साथ बीएस-4 डीजल बसों को इससे छूट दी गई है।

इस बीच, अमेरिकी साइंटिस्ट हीरेन जेठवा ने 14 नवंबर को दिल्ली की सैटेलाइट इमेज शेयर की हैं। इसमें दिल्ली में घना स्मॉग दिखाई दे रहा है। हीरेन अमेरिका की मॉर्गन स्टेट यूनिवर्सिटी में एरोसोल रिमोट सेंसिंग साइंटिस्ट हैं। हीरेन की फोटोज एएपी ने भी शेयर की हैं। पंजाब-चंडीगढ़ में धुंध का अलर्ट जारी किया है। राजस्थान में दो दिन घने कोहरे का अलर्ट है। यूपी और पंजाब में 15 नवंबर तक, हिमाचल में 18 नवंबर तक रात और सुबह के समय घना से बहुत घना कोहरा छाएगा। हरियाणा, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, बिहार, झारखंड में 16 नवंबर तक धुंध छाने का अनुमान है। दिल्ली में प्रदूषण से निपटने ग्रेडेड एक्शन प्लान लागू राजधानी में प्रदूषण को कंट्रोल करने के लिए प्रदूषण के स्तर को 4 कैटेगरी में बांटकर देखा गया है। हर स्तर के लिए लिए पैमाने और उपाय तय हैं। इसे ग्रेडेड एक्शन प्लान कहते हैं।

इसे कहते हैं किस्मत!

रिश्तेदारों से मिलने पंजाब आया युवक हो गया 'मालामाल'

चंडीगढ़ (एजेंसी)। दिल्ली के युवक लव कुमार ने पंजाब दीवाली बम्पर लॉटरी 2024 में 3 करोड़ रुपये जीते है। लॉटरी का परिणाम दिवाली पर घोषित किया गया था, जिसमें 6 करोड़ रुपये के प्रथम पुरस्कार को दो विजेताओं के बीच विभाजित किया गया था। लव कुमार ने पंजाब के नंगल से ये 500 रुपये का लॉटरी टिकट खरीदा था। वो दिल्ली से यहां अपने रिश्तेदार से मिलने आया था। 3 करोड़ रुपये का

दिल्ली के युवक की बल्ले-बल्ले, लॉटरी में जीता 3 करोड़

पुरस्कार जीतने के बाद उन्होंने बताया कि यह उनकी पहली लॉटरी जीत है। लव ने कहा कि पुरस्कार की पूरी राशि वो अपनी मां को देंगे, क्योंकि वो उनकी सबसे बड़ी प्रेरणास्रोत हैं। बता दें कि पंजाब दिवाली बम्पर लॉटरी 2024 के लिए इस बार दो श्रेणियों (ए और बी) में 20 लाख टिकट बेचे गए थे। प्रत्येक टिकट की कीमत 500 रुपये थी। प्रत्येक टिकट की संख्या 000000 से 999999 के बीच थी। 6 करोड़ रुपये के प्रथम पुरस्कार को दो भागों में बांटा गया। इसमें प्रत्येक विजेता को 3 करोड़ रुपये मिले। ए सीरीज में 540826 और बी सीरीज में 480960 जीतने वाले टिकट थे।

ट्रंप की वापसी के साथ फ्रंटफुट पर आएगा क्वाड!

चीन से मुकाबले में भारत को हो सकता है बड़ा फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद अब केवल अमेरिका ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया की राजनीति में कई बड़े बदलाव आने वाले हैं। इसमें एक अहम भूमिका क्वॉड की होगी, जो कि पिछले चार साल से बस एक औपचारिकता वाला शिखर सम्मेलन बनकर रह गया था। अहम बात यह है कि डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद पहला क्वॉल समिट भारत में होगा और यह चीन के लिए सर्वाधिक टेंशन की बात हो सकती है लेकिन कैसे चलिए इसे समझते हैं। अधिकारियों ने कहा कि भारत 2025 में क्वाड शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा,

जिसमें नव-निर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प भी शामिल होंगे। क्वाड शिखर सम्मेलन इस साल सितंबर में नई दिल्ली में आयोजित होना था लेकिन नेताओं के सेट कार्यक्रम के चलते यह न्यूयॉर्क में हुआ था।

राजधानी में छात्रा के घर तलवार लेकर पहुंचा बदमाश

तोड़फोड़ की, बात नहीं करने पर कहा-परिवार को खत्म कर दूंगा,बड़ा हंगामा होगा

भोपाल। भोपाल में 9वीं कक्षा की छात्रा के साथ से छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। आरोपी बात नहीं करने से नाराज होकर पीड़िता को इंस्टाग्राम पर धमकाता था। गणेश चतुर्थी के दिन वह पीड़िता के घर तलवार लेकर पहुंचा और गेट पर तलवारें मारी। पड़ोस में भी तोड़फोड़ की। तब मामले की शिकायत अरेरा हिल्स थाने में की गई थी। परिजनों का आरोप है कि पुलिस ने उसे कार्रवाई किए बगैर छोड़ दिया था। यही कारण है कि आरोपी ने पीड़िता और परिजनों को दोबारा धमकाना शुरू कर दिया। ऐसे में शुक्रवार को परिजन और बस्ती के लोग एमपी नगर थाने पहुंचे।

पुलिस ने तत्काल कार्रवाई का आश्वासन दिया तब प्रदर्शन नहीं किया गया। पीड़िता की मां ने बताया कि बेटी 16 वर्ष की है। सरकारी स्कूल में 9वीं कक्षा की पढ़ाई करती है। आरोपी पास की एक बस्ती में रहता है। वह लगातार इंस्टाग्राम पर बेटी को धमकाता है। अश्लील मैसेज करता है। बात करने का दबाव बनाता है। बेटी बात नहीं करती है तो 7 सितंबर 2024 को घर तलवार लेकर आ धमका था। उसने गेट पर तलवार से वार किए थे। मोहल्ले में तोड़फोड़ की थी। मामले की शिकायत अरेरा हिल्स थाने में की थी। तब पुलिस ने उसे हिरासत में लिया लेकिन कुछ ही देर में छोड़ दिया। यही कारण है उसके हौसले बुलंद हो गए। हम लगातार पुलिस से मांग करते रहे कि आरोपी के खिलाफ कार्रवाई करें लेकिन अरेरा हिल्स पुलिस ने कार्रवाई नहीं की।

माखनपुरम में मनाई गई बिरसा मुंडा जयंती

जनजातीय समुदाय में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत थे भगवान बिरसा

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के रहवासी कॉलोनी 'माखनपुरम' में भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती उत्साहपूर्वक मनायी गई। इस अवसर पर परिसर के वरिष्ठ रहवासी मोहन सिंह मंडलोई का रहवासियों के ओर से सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में उनकी सक्रियता के लिए सम्मान किया गया। इस प्रसंग पर लेखक एवं सहायक प्राध्यापक

लोकेन्द्र सिंह ने भगवान बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व, जीवन एवं उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि भारत में जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों और योद्धाओं की एक दीर्घ परंपरा रही है और स्वतंत्रता संग्राम में उसका अविस्मरणीय योगदान है। इतिहास और राष्ट्रीय संदर्भ में बिरसा मुंडा ऐसा व्यक्तित्व है, जिसने तत्कालीन जनजातीय समाज की परिसीमितता की परिधि को तोड़कर राष्ट्र और धर्म के परिप्रेक्ष्य में ऐसा अमूल्य योगदान दिया जो किसी भी प्रकार से स्वतंत्रता आंदोलन के हमारे अन्य नायकों, विचारकों और चिंतकों के योगदान से कम नहीं है। श्री सिंह ने कहा कि बिरसा का संपूर्ण जीवन देवतुल्य जीवन प्रतीत होता है। मात्र 25 वर्ष की आयु में उन्होंने उन क्षेत्रों में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की लहर पैदा की, जो संसाधनविहीनता और निर्धनता की विकट परिस्थितियों में घिरे थे। बिरसा मुंडा को संपूर्ण देश ने अपना भगवान माना है। बचपन से कुशाग्र बुद्धि के धनी बिरसा ने ईसाई षड्यंत्रों, ब्रिटिश हुकुमत एवं सामाजिक कुरीतियों का जमकर प्रतिकार किया। साथ ही ब्रिटिश सरकार से अपने जंगलों को बचाने के लिये वनवासियों को एकजुट किया। उन्होंने बताया कि भगवान बिरसा भारत के ऐसे सपूत हैं, जिनकी प्रतिमा संसद भवन परिसर में स्थापित है। 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती का उत्सव पूरे देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर परिसर के रहवासियों ने परंपरागत ढंग से भगवान बिरसा मुंडा का पूजन और स्मरण किया। शाम के समय में रहवासियों ने भजन संध्या का भी आयोजन किया।

जनजातीय समुदाय को सिकल सेल एनीमिया से मुक्ति दिलाने सरकार प्रतिबद्ध

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर प्रीनेटल डायग्नोसिस ऑफ हीमोग्लोबिनोपैथीज का किया लोकार्पण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि जनजातीय समुदाय को सिकल सेल एनीमिया से मुक्ति दिलाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने धरती आबा बिरसा मुंडा की जयंती, जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर संजय गांधी स्मारक चिकित्सालय, रीवा में प्रदेश के पहले शासकीय 'सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फ़ॉर प्रीनेटल डायग्नोसिस ऑफ़ हीमोग्लोबिनोपैथीज़' का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि यह महत्वपूर्ण केंद्र विंध्य क्षेत्र के नागरिकों, विशेषकर जनजातीय समूह के नागरिकों में रक्तजनित वंशानुगत विकारों के शोध, जांच एवं नैदानिक चिकित्सकीय परीक्षण के लिए समर्पित रहेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि केन्द्र की स्थापना प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं को एक नए आयाम पर ले जाने का प्रयास है, जिससे रक्तजनित विकारों से प्रभावित विशेष समूहों को सटीक और समर्पित चिकित्सा सेवा प्रदान की जा सके। विंध्य क्षेत्र के नागरिकों, विशेषकर

जनजातीय समुदायों में इन विकारों की व्यापकता को देखते हुए इस केन्द्र की आवश्यकता थी। यह केन्द्र रक्तजनित वंशानुगत विकारों का गहन अध्ययन करेगा और रोग की समय पर पहचान कर चिकित्सा सेवा प्रदान करेगा। कार्यक्रम में गांधी स्मारक चिकित्सालय के वरिष्ठ चिकित्सक और अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। मध्यप्रदेश में सिकिल सेल एनीमिया नियंत्रण के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रयास किए गये हैं। अब तक 80 लाख 67 हजार 135 लोगों की स्क्रीनिंग कर मध्यप्रदेश देश में शीर्ष स्थान पर है। सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन के प्रथम चरण में 46 लाख से अधिक लोगों को जेनेटिक काउंसलिंग कार्ड वितरित किए गए हैं, जिसमें भी मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। मध्यप्रदेश में सिकल सेल एनीमिया नियंत्रण के सफल पायलट प्रोजेक्ट के आधार पर पूरे देश में 'सिकिल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन 2047' की शुरुआत की गई है, जिसमें 17 राज्य शामिल हैं।

हम भारतीय आपस में बंटेंगे तो चीन-पाकिस्तान वाले हमको काटेंगे

धीरेन्द्र शास्त्री ने भोपाल में कहा-हिंदू तुम्हारी मस्जिदों में घुसे तो जूते मारो

भोपाल। बागेश्वर धाम के कथावाचक पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के 'बंटेंगे तो कटेंगे' और प्रधानमंत्री मोदी के 'एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे' बयान का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि हम भारतीय आपस में बंटेंगे तो चीन वाले हमको काटेंगे, पाकिस्तान वाले हम लोगों को काटेंगे। वहीं कुंभ में गैर हिंदुओं को एंट्री नहीं देने के अपने बयान पर भी धीरेन्द्र शास्त्री कायम है। उन्होंने

कहा- हमने बिल्कुल कहा है कि मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है। तुम हमारे यहां जाकर क्या करोगे? धंधा करके मूत्र कांड करोगे? थूक कांड करोगे। धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा- हम तुम्हारी मस्जिदों में नहीं घुसते, तुम हमारे यहां क्यों आओगे? हमारे हिंदू तुम्हारी मस्जिदों में घुसे तो जूते मारो। धीरेन्द्र शास्त्री शुक्रवार को भोपाल में भाजपा विधायक संजय पाठक के निवास पर पहुंचे थे। यहां उन्होंने मीडिया से बात की। उन्होंने भारतीय क्रिकेट टीम को पाकिस्तान नहीं भेजने के बीसीसीआई के फैसले पर कहा कि यह सही फैसला है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान कंगाल देश है वहां जाकर क्या करेंगे? वह भिखमंगा देश है। पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के 'बंटेंगे तो कटेंगे' वाले बयान पर कहा कि राजनीतिक दृष्टि से वह गलत है। लेकिन, सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो भारत के लोग अगर बंटेंगे तो चीन वाले काटेंगे। धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा- किसी भी राजनेता के ऊपर आज तक हमने टिप्पणियां नहीं की हैं। ना कोई जवाब दिया है। ये हमारे स्वभाव में है, क्योंकि हमारा रास्ता आध्यात्मिक रास्ता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने महात्मा होने और कट्टर हिंदू होने के नाते नारा दिया तो यह बहुत अच्छा दिया है। लोगों ने अपनी-अपनी दृष्टि से देखा, लेकिन हमने इसको ऐसे देखा कि अगर हम भारतीय आपस में बंटेंगे तो, चीन वाले हमको काटेंगे, पाकिस्तान वाले हम लोगों को काटेंगे। हम लोगों को विदेशी ताकते काटेंगी। धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा- भारत के प्रधानमंत्री ने कहा है कि हम एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे। अगर पॉलिटिकल बयान पर कहें तो इस पर हमारी कोई टिप्पणी नहीं है। लेकिन हिंदुस्तानी होने के नाते हमारी यह टिप्पणी हैं कि हम भारतीयों को बंटना नहीं है। अगर बंटेंगे तो सच में कटेंगे।

हम तुम्हारी मस्जिदों में नहीं घुसते, तुम हमारे यहां क्यों आओगे

कुंभ में गैर हिंदुओं को एंट्री नहीं देने के अपने बयान पर धीरेंद्र शास्त्री ने कहा- 'हमने बिल्कुल कहा है कि मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है। मक्का मदीना में हमें नहीं बुलाया जाता। आप इतने ही उदारवादी गंगा-जमुनी वाले हो तो मक्का मदीना में हमारी दुकान लगवा दो। हम भी गरीब ही हैं भैया।' उन्होने कहा- 'भारत में इतने हिंदू गरीब हैं तो आपकी मजारों के सामने हम लोगों की दुकान नहीं लगती तो मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है? आपको त्रिवेणी का ज्ञान नहीं, संगम का ज्ञान नहीं, संतों के मान का पता नहीं, कथा का पता नहीं। खालसा क्या होते हैं, पंथ क्या होता है इसके बारे में पता नहीं। तो तुम हमारे यहां जाकर क्या करोगे। बांग्लादेशी घुसपैठियों को शरण देने और सिलेंडर देने के ऐलान पर धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा इस देश में बहुत प्रायोजित तरीके से षड्यंत्र चल रहा है। विधर्मी लोग जिन्हें हिंदुत्व से बैर है, जिन्हें वंदे मातरम बोलने से दिक्कत है, जिन्हें राष्ट्रगान गाने से दिक्कत है। जिन्हें गजवा ए हिंद चाहिए। वह लोग अपनी संख्या बढ़ा रहे हैं। बच्चे भी ज्यादा पैदा कर रहे हैं और विदेशों में भी रहने वाले उनके इष्ट मित्र बांग्लादेश के रोहिंग्याओं को बुला-बुला कर भारतीय वोट बैंक को बढ़ाकर अपनी सत्ता जमाना चाहते हैं। इसलिए भारत की सरकार को, हमको और आपको इसी वक्त जागना पड़ेगा कि हम विदेशी शरणार्थियों को और देश विरोधियों को देश में पनाह नहीं देंगे।

प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग को स्टाफ का इंतजार

जनगणना की तैयारियों के बीच कछुआ चाल से चल रहा काम, 42 साल बाद होगा बदलाव

भोपाल। प्रदेश में प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग का काम धीमी गति से चल रहा है। इसके लिए दो दिन पहले राज्य सरकार ने आयोग के सचिव की नियुक्ति कर दी है पर अभी स्टाफ और दफ्तर का इंतजाम नहीं किया गया है। इसलिए इसके काम में प्रशासनिक तौर पर तेजी नहीं आ पा रही है। दूसरी ओर डेढ़ माह बाद जनगणना की तैयारियां भी शुरू होनी हैं। जिसके लिए केंद्र सरकार की ओर से फाइनल डेट का इंतजार किया जा रहा है। केंद्र सरकार ने संकेत दिए हैं कि एक जनवरी 2025 के बाद कभी भी जनगणना शुरू हो सकती है और इसके बाद आयोग अपनी रिपोर्ट दे सकता है। लेकिन इस

पर अमल जनगणना पूरी होने के बाद ही हो सकेगा। जिलों, संभागों, तहसीलों और जनपदों के पुनर्गठन की कवायद मप्र में इसके पहले वर्ष 1982 में हुई थी। अब 42 साल बाद भौगोलिक से लेकर प्रशासनिक ढांचे में बदलाव के लिए काम शुरू हुआ है। प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग के लिए पहली नियुक्ति रिटायर्ड आईएएस मनोज श्रीवास्तव की हुई है। 9 सितम्बर 2024 को जारी आदेश में श्रीवास्तव को आयोग का सदस्य बनाया गया है। इसके बाद 18 अक्टूबर 2024 को आयोग में रिटायर्ड आईएएस व सचिव स्तर के अधिकारी रहे मुकेश शुक्ला को भी सदस्य नियुक्त किया गया। अब 12 नवम्बर को जारी आदेश में शासन ने जीएडी के अपर सचिव अक्षय कुमार सिंह को सचिव प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है लेकिन स्टाफ और दफ्तर के बारे में अभी तक कोई फैसला नहीं हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने 1 जनवरी 2024 को कहा कि भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए संभागों और जिलों की सीमाओं को फिर से परिभाषित करने की जरूरत है। इसकी शुरुआत पायलट आधार पर इंदौर संभाग से होगी। 27 फरवरी को मोहन कैबिनेट ने राज्य की प्रशासनिक इकाइयों के पुनर्गठन के लिए मध्य प्रदेश प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग के गठन को मंजूरी दी। 12 मार्च को मध्यप्रदेश प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग के गठन, आयोग के कार्यक्षेत्र, आयोग की संरचना, वेतन तथा भत्ते, प्रशासनिक संरचना एवं वित्तीय प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। इसका नोटिफिकेशन 12 मार्च को किया गया। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने 22 अक्टूबर को कहा था कि राज्य के संभागों, उप-संभागों, जिलों, तहसीलों और विकास खंडों के पुनर्गठन की प्रक्रिया शुरू की जा रही है। जनप्रतिनिधि और आम जनता अपने सुझाव और आवेदन आयोग को संभागों के दौरे के दौरान दे सकेंगे। इन सुझावों की समीक्षा के बाद आयोग अपनी सिफारिशें राज्य सरकार को सौंपेगा। शहरी क्षेत्रों की सीमाओं के संबंध में भी आयोग को प्रस्ताव सौंपे जा सकेंगे।

बीजेपी नेता ने बीच सड़क छुए सफाई दरोगा के पैर

हाथ जोड़कर कहा-सफाई करा दो,दरोगा बोला-दिखावा मत करो

भोपाल। भोपाल में बीजेपी के जिला मंत्री ने नगर निगम के सफाई दरोगा के बीच सड़क पैर छू लिए। हाथ जोड़कर कहा- वार्ड में सफाई करा दो। इस पर दरोगा ने जवाब दिया- दिखावा मत करो। हालांकि, बाद में नेता जी के वार्ड में सफाई करा दी गई। मामला राजधानी के 1100 क्वार्टर के महावीर नगर में शुक्रवार सुबह 11 बजे का है। यहां हनुमान मंदिर में सफाई दरोगा सुमित गजभिए अपने स्टाफ के साथ मौजूद थे। इसी बीच बीजेपी के जिला मंत्री राजकुमार विश्वकर्मा भी पहुंच गए। बीजेपी के जिला मंत्री विश्वकर्मा अपने वार्ड में सफाई नहीं होने से नाराज थे। जैसे ही उन्हें पता लगा कि सफाई दरोगा सुमित क्षेत्र के ही हनुमान मंदिर में मौजूद हैं, वे पहुंच गए। विश्वकर्मा के साथ कुछ अन्य लोग भी थे। सुमित को देखते ही विश्वकर्मा

उनके कदमों में झुक गए। इस पर सुमित ने पीछे हटते हुए कहा- दिखावा क्यों कर रहे हो? मैं दिखावा नहीं करता हूं। भैया ने बोल दिया है इसलिए मैंने मजदूर पहुंचा दिए हैं। इसके बाद भी विश्वकर्मा ने दरोगा से हाथ जोड़कर सफाई का आग्रह किया। यह पूरा मामला महापौर मालती राय तक भी पहुंचा। उन्होंने निगम के अफसरों से बात की। इसके बाद निगम अमले ने महावीर नगर पहुंचकर इलाके की सफाई कर दी। वार्ड-48 में गंदगी का अंबार लगा था। सफाई दरोगा एवं अधिकारियों को बोलो तो भी समस्या का समाधान नहीं होता। दरोगा सुमित को पांच से छह बार आग्रह कर चुका हूं कि वह वार्ड में सफाई करवा दें, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। आज दरोगा के मंदिर के पास होने की जानकारी मिलने के बाद मैं वहां पहुंचा। दरोगा के हाथ जोड़ते हुए पैर पड़े और दोबारा सफाई का आग्रह किया। वार्ड-48 से बीजेपी पार्षद अरविंद वर्मा ने कहा- मेरे पास भी दरोगा की शिकायतें आ रही हैं। वे रहवासियों के मोबाइल कॉल भी रिसीव नहीं करते हैं। चाहे पार्टी कार्यकर्ता हो या रहवासी, यदि वे समस्या बता रहे हैं तो उसका निराकरण दरोगा को करना चाहिए। कोई भी उन्हें घर का काम तो बताएगा नहीं। दरोगा की मनमर्जी की शिकायत मैंने भी महापौर से की है। इस मामले में महापौर राय ने कहा- नया दरोगा है। काम समझ में नहीं आ रहा है। क्षेत्र में बेहतर साफ-सफाई के लिए निर्देश दिए हैं।

राजधानी की 2 बड़ी कॉलोनियों में 25 घंटे से बिजली गुल

सीएम हाउस पहुंचे द्वारकाधाम-गोकुलधाम के लोग,मंत्री सारंग से भी मिले

भोपाल। भोपाल की न्यू जेल रोड स्थित दो बड़ी कॉलोनियों द्वारकाधाम और गोकुल धाम में 25 घंटे से बिजली गुल रही। इससे दोनों कॉलोनी के करीब 700 घरों में रातभर अंधेरा रहा। रात में गांधीनगर थाना घेरने के बाद रहवासी सीएम हाउस पहुंचे और बिजली बहाल करने की मांग की। शुक्रवार को मंत्री विश्वास सारंग से भी मिले। उनका कहना है कि हमने पूरी राशि दी पर बिल्डर ने जमा नहीं कराई। उस पर केस दर्ज हो। करीब 1.20 करोड़ रुपए की बकाया राशि होने पर बिजली कंपनी ने गुरुवार सुबह 11 बजे दोनों कॉलोनियों के बिजली कनेक्शन काट दिए थे, जो शुक्रवार दोपहर 12 बजे के बाद जोड़ दिए गए। इस तरह 25 घंटे से अधिक समय से यहां बिजली गुल रही। जिससे रहवासी खासे परेशान हो रहे हैं। गुरुवार देर रात रहवासी गांधीनगर थाने पहुंचे थे। यहां उन्होंने बिल्डर पर धोखाधड़ी की एफआईआर कराने के लिए शिकायती आवेदन दिया। जब पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की तो रात साढ़े 12 बजे वे सीएम हाउस पहुंचे। ताकि, सीएम डॉ. मोहन यादव को अपनी समस्या सुना सकें। हालांकि, उनकी सीएम डॉ. यादव से मुलाकात नहीं हुई। उन्होंने सीएम हाउस के अफसर को आवेदन सौंपा। रहवासियों का

कहना है- हमने नियमित रूप से हर महीने बिल्डर को बिजली बिल की राशि दी है, लेकिन उसने बिजली कंपनी में जमा नहीं कराई। इस वजह से लाखों रुपए की बकाया राशि निकल गई है। हमारी गलती नहीं है। सीएम हाउस में सौंपे आवेदन में यह लिखा- द्वारकाधाम और गोकुलधाम में करीब 700 परिवार रहते हैं। हमारे बिल्डर ने सिंगल एचटी कनेक्शन ले रखा है। जिन्हें रहवासी बिजली बिल की राशि जमा कराते हैं। 95 प्रतिशत से अधिक रहवासी नियमित रूप से बिल की राशि देते हैं, लेकिन बिल्डर ने यह राशि बिजली कंपनी को नहीं दी। इससे बकाया राशि अधिक हो गई है। इस कारण गुरुवार सुबह 11 बजे कनेक्शन काट दिए गए। तभी से बिजली गुल है। यह जानकारी कलेक्टर और एसडीएम को भी है और उन्होंने पूरा विवरण जांच करके बिल्डर को बिल भरने के आदेश भी दिए थे। फिर भी राशि जमा नहीं की गई। इस पर कॉलोनी के करीब 200 लोगों ने थाने में शिकायत की है। परिवारों में वृद्ध, महिलाएं एवं बच्चे भी हैं। बिजली गुल होने से दिक्कतें खड़ी हो गई हैं। इस कॉलोनी में करीब 100 पूर्व सैनिक परिवार, 100 डॉक्टर परिवार और बाकी सभी संभ्रांत लोग है।

सीएम से यह मांग की

- बिना कोई देर किए हुए बिजली को बहाल करने के आदेश दिए जाए।
- पूरे मामले को उच्च अधिकारी से जांच करवाई जाए।
- दोषियों से पैसे वसूले जाए और उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाए।
- शुक्रवार को रहवासियों ने मंत्री विश्वास सारंग से भी शिकायत की।
- शुक्रवार को रहवासियों ने मंत्री विश्वास सारंग से भी शिकायत की।

एक महीने पहले भी काटी थी बिजली

एक महीने पहले भी दोनों कॉलोनियों की बिजली काटी गई थी। रहवासी एसडीएम आदित्य जैन के पास भी पहुंचे थे। इसके बाद एडीएम और एसडीएम ने बिजली कंपनी के अधिकारियों से बात की और फिर घरों की बिजली बहाल हो पाई थी।

संपादकीय

उपचुनावों में भी हिंसा चिंताजनक

देश में 13 राज्यों की 47 विधानसभा सीटों पर 13 नवंबर को हुए उपचुनावों में मप्र, राजस्थान सहित कई राज्यों में हुई भारी हिंसा अत्यंत चिंता का विषय हैं। मप्र के विजयपुर तथा राजस्थान के टोंक जिले की देउली उनियारा सीट पर तो मतदान के बाद भी भयंकर हिंसा हुई। इससे चुनाव के दौरान की गई सुरक्षा व प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर सवाल उठ रहे हैं। साथ में इस बात पर भी गंभीरता से चिंतन होना चाहिए कि हिंसा की यह स्थिति क्यों बनी? क्या इसके पीछे प्रशासन की कोई कमजोरी थी या फिर चुनाव आयोग ने सुरक्षा व शांति के पर्याप्त इंतजाम नहीं किए थे? यूं उपचुनाव में पश्चिम बंगाल व कुछ अन्य राज्यों में भी हिंसा और उपद्रव हुआ है, लेकिन मप्र और राजस्थान में तो इसने सारी हदें लांघ दीं। विजयपुर में मुख्य मुकाबला कांग्रेस छोड़ भाजपा में आए रामनिवास रावत और कांग्रेस के मुकेश मल्होत्रा के बीच है। श्योपुर जिले के चार गांवों में चुनाव पूर्व हिंसा में 11 लोग घायल हुए हैं। ग्राम धनाचया में बदमाशों ने खुलेआम फायरिंग करते हुए आदिवासी मतदाताओं को धमकाया और उनसे मतदाता पर्चियां मांगीं। वहीं, दंगपुरा, पातालगढ़ और झरेर गांवों में भी रात को फायरिंग और मारपीट की गई। पुलिस ने पीड़ितों से शिकायत का आवेदन लेकर जांच शुरू कर दी है। शुरू से ही माना जा रहा था कि यह चुनाव कशमकश भरा होगा। लेकिन मतदान के पहले और बाद में जिस तरह से हिंसा वहां हुई है, ऐसा लगता है कि रावत इस चुनाव को येन केन प्रकारेण जीतना चाहते हैं। हालांकि हिंसा के लिए कांग्रेस और भाजपा दोनों एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं, लेकिन जिस तरह दबंगों ने दलितों और आदिवासियों पर हमला किया, उससे साफ है कि इसके पीछे किसका हाथ हो सकता है। उधर अपेक्षाकृत शांत रहे बुधनी में भी कांग्रेस प्रत्याशी ने गड़बड़ी के आरोप लगाए हैं। कांग्रेस ने विजयपुर विस सीट के 37 मतदान केन्द्रों पर फिर से चुनाव कराने की मांग की है। हालांकि इस बारे में चुनाव आयोग ने इस बारे में निर्णय नहीं लिया है। उधर राजस्थान के टोंक जिले की सीट पर निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा ने सरेआम एसडीएम को थप्पड़ मारा। यह अपने आप में दुस्साहस था। चुनाव में आरोप प्रत्यारोप होते हैं,लेकिन कोई चुनाव अधिकारी पर हाथ उठा दे, यह अपने आप में दुर्भाग्यपूर्ण और विरल घटना है। मीणा को शक था कि प्रशासन मतदान में गड़बड़ी करवा रहा है। जब पुलिस मीणा को गिरफ्तार करने गई तो उसके समर्थकों ने उपद्रव किया और भारी हिंसा की। उपद्रवियों ने पुलिस को पीटा और सौ से ज्यादा गाड़ियों में आग लगा दी गई। भारी तोड़फोड़ भी हुई। जब पुलिस ने एक बार नरेश मीणा को हिरासत में लिया तो मीणा के समर्थक जबर्दस्ती उसे छुड़ा ले गए। हालात को बिगड़ते देख वहां ज्यादा संख्या में पुलिस बल भेजा गया। हालांकि बाद में पुलिस ने मीणा को पकड़ लिया है। लेकिन उसके समर्थक अभी भी हंगामा कर रहे हैं। नरेश मीणा का पुराना आपराधिक रिकॉर्ड बताया जाता है। हिंसा में घायल पुलिसकर्मियों सहित सभी का अस्पताल में इलाज चल रहा है। इस हिंसा की सभी राजनीतिक दलों ने निंदा की है। लेकिन उपचुनावों में होने वाली ही भारी हिंसा और उपद्रव यह सोचने पर विवश करती है कि इन उपचुनावों के नतीजों से दोनों राज्यों की सत्ताओं पर कोई फरक नहीं पड़ने वाला था। दोनों राज्यों में भाजपा की सरकार है और दोनों में पार्टी को पर्याप्त बहुमत है। ऐसे में एक सीट जीतने के लिए की जानी वाली हिंसा का कोई औचित्य नहीं है।

नजरिया

आशीष कोठारी

लेखक 'कल्पवृक्ष' संगठन में पर्यावरण, विकास व विकल्प संगम पर काम करते हैं।

दीपक धोलकिया द्वारा अनुवादित।

जीवन से जुड़ी आजीविका

हम इतनी बेचैनी से इंतज़ार क्यों करते हैं कि कब दिन का काम खत्म हो या कब हफ्तेभर के काम के बाद दो दिन की छुट्टी मिले? क्या काम की परिभाषा में बदलाव किया जा सकता है ताकि हम काम में आनंद और खुशी को भी जोड़ सकें? आर्थिक विकास ने आजीविकाओं को 'निर्जीविकाएं' बना दिया है। यह विकास सदियों से बने काम के तरीक़ों को मिटा रहा है। हमारा जीने का तरीक़ा ऐसा था, जिसमें काम और फ़ुर्सत के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं था; अब उनकी जगह 'असेंबली लाइन' की नीरस नौकरियाँ हथियाने लगी हैं और हम काम के हफ्ते के बाद दो दिन की मुक्ति और दूसरी छुट्टियों का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं।

हमें बताया जाता है कि प्राथमिक क्षेत्र के कामों से मैन्युफेक्चरिंग और सेवाओं की ओर बढ़ना ही अर्थिक प्रगति है। इसलिए वह आजीविका जो वस्तुतः हम सभी को जीवित रखती है - खेती, वानिकी, पशुपालन, मत्स्य-पालन और संबंधित कारीगरी - को हम पिछड़े काम मानते हैं। भारत में, इस सोच के चलते 70 से 80 करोड़ लोगों, यानि देश की दो-तिहाई आबादी - को हाशिए पर खदेड़ दिया गया है। नतीजे में लाखों किसानों की आत्महत्या या कथित विकास परियोजनाओं के कारण 6 करोड़ लोगों का अपने खेतों, जंगलों और तटों से विस्थापन हाथ लगा है। ऐसे कई लोग हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं, उन्हें इन संसाधनों से महरूम किया जाता है। हमारा ध्यान बमुश्किल ही इस बात पर जाता है कि ये लोग ग़रीब होते जा रहे हैं। उनके ज़मीन और पानी उद्योगों, सडकों, खनन और शहरों के लिए छीने जा रहे हैं। विकास ने ग़रीबी के नए-नए रूपों को जन्म दिया है।

मान लें कि यह तो करना ही पड़ेगा और करना अच्छा भी है, लेकिन हम इनकी जगह क्या ले आये हैं? गरीबों के लिए या तो कोई रोज़गार नहीं हैं और हैं भी तो निर्माण स्थलों, खदानों, उद्योगों, ढाबों और ऐसी जगहों पर जहां अनिश्चित, शोषणकारी और असुरक्षित रोज़गार हैं, जिन्हें शायद ही कम मशक्क़त का काम कहा जा सकता है। विडंबना यह है कि 93 प्रतिशत भारतीय रोज़गार अनौपचारिक क्षेत्र में हैं और इनका शोषण लगातार बढ़ता जा रहा है। काम के बदले कमाई के मामले में मध्यम वर्ग और अमीरों की स्थिति बहुत अच्छी है। एक अध्ययन से पता चलता है कि एक फीसदी भारतीयों के पास देश की कुल संपत्ति का 50 फीसदी से ज़्यादा हिस्सा है, लेकिन ऐसे काम की गुणवत्ता क्या है?

आईटी उद्योग जैसे आधुनिक क्षेत्रों में काम करने वाले ज़्यादातर लोग दुनिया भर में फैली एक विशाल असेंबली लाइन के यांत्रिक पुर्ज़े हैं। कॉल सेंटरों में अलस्सुबह से देर रात तक, कंप्यूटर टर्मिनल पर झुके हुए रटे-रटाए जवाब देते रहते हैं या हर पल भूखे 24×7 न्यूज़ चैनलों को न्यूज़ देने के लिए जी-तोड़ मेहनत करते हैं या शेयर बाज़ार के आँकड़ों को घूरते रहते हैं - कौन ईमानदारी से कह सकता है कि ये 'निर्जीविकाएं' नहीं हैं - जो हमारी स्वतंत्रता और जन्मजात रचनात्मकता को दबाती हैं? अगर ऐसा नहीं है, तो हम दिन का काम खत्म होने या हफ्ते के अंत

में छुट्टियों का इतनी बेताबी से इंतज़ार क्यों करते हैं? हमें अपने को खुश रखने के लिए 'रीटेल थेरपियों' के छिछले तरीक़े क्यों आजमाने पड़ते हैं?

ऐसा नहीं है कि सभी आधुनिक रोज़गार 'निर्जीविकाएं' हैं, या सभी पारंपरिक आजीविकाएँ बढ़िया थीं। पहले भी असमानता और शोषण, खासकर लिंग व जाति को लेकर थे, यहाँ तक कि उबाऊ मशक्क़त भी थी, लेकिन उस 'सूखे' के साथ, सार्थक आजीविकाओं के रूप में जो कुछ 'हरा-भरा' था, उसे भी जला देना सही नहीं होगा।

ऐसे कई उदाहरण हैं, जो कभी ग़रीब रहे किसानों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने में मदद करते हैं, जैसे कि 'डेक्कन डेवलपमेंट सोसाइटी' जिसमें दलित महिला किसान 'अन्न स्वराज' की तरफ बढने के साथ-साथ फिल्म निर्माता और रेडियो स्टेशन मैनेजर तक बन गई हैं; या 'दस्तकार' जिन्होंने सिद्ध किया है कि कारीगर आज भी खरा है; उन्होंने हाथ से काम करने वाले तमाम कारीगरों को नई गरिमा दी है। इसी तरह आधुनिक क्षेत्र में भी गिने-चुने सार्थक रोज़गार हैं - खेतों और जंगलों में काम करने वाला जीवविज्ञानी, जो प्रकृति में रहना पसंद करता है, संगीत शिक्षक जो उत्साहपूर्वक छात्रों की प्रतिभा को सामने लाता है, एक 'शेफ' जो खाना पकाने के काम को प्रेम करता है और ऑर्गेनिक आहार की रसोई की साज-संभाल करता है।

मौजूदा प्रवाह के विरुद्ध जाने के लिए शिक्षा में बुनियादी बदलाव की ज़रूरत है। स्कूलों और कॉलेजों में हमारे दिमाग़ में यह ठूँस दिया जाता है कि बौद्धिक कार्य शारीरिक श्रम से बेहतर है। हमारे दिमाग़ को इस तरह मोड़ा जाता है कि इसमें हाथ, पैर और हृदय की क्षमता के विकास की गुंजाइश नहीं रहती। हमारे समक्ष ऐसे लोगों को रोल-मॉडल की तरह पेश किया जाता है जो प्रकृति पर हावी होकर दूसरों को नीचे गिराते हुए सफलता की सीढ़ियाँ चढ़े हैं।

हम बड़े होते हैं तो उत्पादकों व कारीगरों को कुछ नहीं समझते। किसानों को उनकी उपज के लिए बेहद कम कीमतें मिलती हैं। इसी से समझ में आएगा कि हमारे समाज की प्राथमिकताएं कितनी विकृत हैं। जो हमें ज़िंदा रखता है, उसे तो हम वाजिब दाम भी चुकाना नहीं चाहते, परंतु ब्रांडेड जूते और उपकरणों के लिए मुँह माँगी क़ीमत चुकाने को तैयार रहते हैं। हम इस बात की परवाह भी नहीं करते कि कामगार को क्या मिलता है। एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन आर्थिक संरचनाओं में करना ज़रूरी है: ज़मीन और प्राकृतिक संसाधनों पर सामुदायिक अधिकार की सुरक्षा, उत्पादन के साधनों पर कामगारों का नियंत्रण और बाजारों पर सामाजिक नियंत्रण।

अगली बार जब ख़ानाबदोश चरवाहों को अपने शहरों की सड़कों पर भेड़ों के साथ देखें, तो इस बारे में सोचें। शायद वे बीते ज़माने के लोग हैं जो जल्द ही गायब हो जाएँगे, लेकिन कौन कह सकता है कि हमारे आईटी या डिजिटल मीडिया या कॉल सेंटर की नौकरियों के साथ भी ऐसा ही नहीं होगा? शायद अब से एक पीढ़ी के आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस वाले रोबोट, हममें से कुछ को कंप्यूटर स्क्रीन पर घूरते हुए देखकर मुस्कुराएँगे कि हम कैसे निठल्ले पोंगा-पंडित हैं। न केवल किसान और मछुआरे, बल्कि मनुष्य भी काल के गाल में समा जाएंगे - बटनों को नियंत्रित करने वाले कुछ लोगों को छोड़कर। क्या यह केवल मिथ्या है? शायद, लेकिन इस तरह की कई कथाएं सच हो गई हैं।

इससे पहले कि हम ऐसे भविष्य में पहुँच जाएं जहाँ मनुष्य ही ग़ैर-ज़रूरी बन जाए, हमें कुछ गंभीर पुनर्विचार करना होगा। यह परिवर्तन हो सकता है कि हम केवल एक आईटी प्रोफेशनल या लेखक बनने की जगह, वह इंसान बन सकें जो बनने की हम क्षमता रखते हैं। शायद हम किसानों को रिसर्चर और फिल्मकार बनने में मदद भी कर सकते हैं जो मार्क्स के दृष्टिकोण का दूसरा रूप है : शिकारी-मछुआरे-पशुपालक-आलोचक। कई लोग कुशल रिसर्चर, किसान, संगीतकार, पालक, शोधकर्ता हैं, जो काम और आराम, शारीरिक और मानसिक, पुराने और नए के बीच के झूठे विभाजन को तोड़ते हुए एक सहज समग्रता में जी रहे हैं।

यह देर-सबेर ज़रूर होगा। तब तक हमें कम-से-कम जीवन के उन तरीक़ों की सराहना करनी चाहिए जो हज़ारों साल से पृथ्वी का आदर करके टिके हैं, न कि उनकी सराहना करें जिसने हम में से कई लोगों को सबसे अलग-थलग करने वाले आधुनिक रोज़गार दिये हैं। क्या हम एक भीमकाय उत्पादन प्रणाली - जो केवल कुछ लोगों को समृद्ध करती है - का बेजान पुर्जा बने रहना चाहते हैं? आइए देखें कि हम पुराने और नए में जो अच्छा है उसे कैसे जोड़ सकते हैं, ताकि दोनों को अधिक सार्थक और संतुष्टिदायक बनाया जा सके। यह शायद आजीविकाओं को वापस लाने और 'निर्जीविकाओं' को तिलांजलि देने की शुरुआत होगी। (सप्रेस)

राजनीति

चेतनादित्य आलोक

लेखक स्तंभकार हैं।

नाराजगी और विरोध से संकट में इंडिया गठबंधन

बागियों की भूमिकाओं, दल-बदलुओं की चालबाजियों तथा विभिन्न दलों के भीतर मची कलह-कुचाल के कारण झारखंड में होने वाले विधानसभा चुनाव की चर्चा काफी गर्म है। वर्तमान विधानसभा का कार्यकाल 05 जनवरी 2025 को समाप्त होगा, लेकिन यहां की सभी 81 विधानसभा सीटों के लिए दो चरणों में 13 और 20 नवंबर को वोट डाले जाएंगे। वैसे तो, राज्य में आएनडीआइए (इंडिया) और एनडीए गठबंधनों के बीच सीधी टक्कर होने की बातें कही जाती हैं, लेकिन धरातल पर इस बार भी पूर्व की तरह मुख्य चुनावी लड़ाई मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) और भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) में ही दिखाई पड़ रही है। हालांकि गौरतलब है कि दलों के बीच गठबंधन वाली एकता जैसी एनडीए खेमे में दिखाई पड़ रही है, वैसी एकता आएनडीआइए गठबंधन के खेमे में नहीं है। इसके कारण आएनडीआइए खेमे में मायूसी और चिंता का माहौल बना हुआ है, जबकि दूसरी ओर एनडीए खेमे में निश्चित तौर पर उत्साह और खुशी का माहौल बना हुआ है। इसके बावजूद दोनों गठबंधनों की ओर से अपनी-अपनी जीत के दावे बेहद जोर-शोर से किए जा रहे हैं। बहरहाल, इस बात का पता तो आगामी 23 नवंबर को ही पता चल पाएगा कि चुनाव में किसकी गाड़ी मंजिल तक पहुंचती है और किसकी गाड़ी बीच मजधार में ही फंसी रह जाती है। वैसे खुश होने की एक वजह तो है कि लंबे समय तक नक्सल-प्रभावित रहे झारखंड राज्य में पिछले कुछ वर्षों के दौरान नक्सली गतिविधियों पर लगाम लगाने में सुरक्षा बलों को बड़ी सफलता मिली है।

राज्य के विश्रामपुर विधानसभा सीट की बात करें तो पिछले दिनों यहां पर इंडिया गठबंधन के भीतर खुल कर विरोधी गतिविधियां देखी गईं। गौरतलब है कि सीटों के बंटवारे के बाद विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के कोटे में गई थी, जबकि आरजेडी ने विश्रामपुर विधानसभा से जैसे ही अपने उम्मीद्वार रामनरेश सिंह को खड़ा किया, लगे हाथ कांग्रेस ने भी अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए। कांग्रेस पार्टी यहीं नहीं रूकी, बल्कि उसने विश्रामपुर विधानसभा पर अपना दावा ठोंकते हुए अपने नेता सुधीर कुमार चंद्रवंशी को टिकट थमा दिया। स्थिति यहां तक तक पहुंच गई कि सुधीर कुमार चंद्रवंशी ने क्षेत्र से नामांकन करके अपने ही अलायंस के पार्टनर प्रत्याशी राजद के रामनरेश सिंह की मुश्किलें बढ़ा दीं। ऐसा माना जा रहा है कि कांग्रेस ने आरजेडी प्रत्याशी के विश्रामपुर सीट से चुनाव हारने की आशंका के कारण उसने इस सीट पर अपना प्रत्याशी उतारा है, क्योंकि यदि राजद प्रत्याशी बीजेपी के प्रत्याशी से चुनाव हार गए तो आएनडीआइए गठबंधन को बड़ा नुकसान उठाना पड़ सकता है। बता दें कि एक जमाने में विश्रामपुर विधानसभा सीट कांग्रेस का मजबूत किला माना जाता था। हालांकि, पिछले दो चुनावों में उसके प्रत्याशियों को लगातार

हार का सामना भी करना पड़ा है, जिससे कांग्रेस का किला पूरी तरह दरकता हुआ दिखाई देने लगा था। वहीं, 2014 में पहली बार इस सीट पर बीजेपी का खाता खुला, जब राजद छोड़कर बीजेपी में आए रामचंद्र चंद्रवंशी ने चुनाव जीता था।

फिर उन्होंने 2019 में भी अपनी जीत को भली-भांति दोहराने का कार्य किया। यही कारण है कि पार्टी ने इस बार उन्हें हैट्रिक लगाने की मंशा से मैदान में उतारा है। इसमें संदेह नहीं कि यदि आएनडीआइए गठबंधन की आपसी कलह समय रहते समाप्त नहीं हुई तो बीजेपी उम्मीद्वार की हैट्रिक लगनी सुनिश्चित है। इसी प्रकार, बीजेपी नेता रवींद्र राय के विद्रोही तेवर के कारण धनवार विधानसभा सीट से चुनावी मैदान में उतरे भाजपा के बाबूलाल मरांडी की चुनावी जंग शुरुआती दौर में फंसती दिखाई पड़ने लगी थी, लेकिन बीजेपी ने समय रहते रविन्द्र राय को झारखंड बीजेपी का कार्यकारी अध्यक्ष बनाकर डैमेज कंट्रोल करने में सफलता पा ली, जिससे बाबूलाल मरांडी का संकट शीघ्र ही टल गया। दूसरी ओर, धनवार विधानसभा सीट पर भी एक बार फिर आएनडीआइए गठबंधन की ही गाड़ी फंसती नजर आने लगी, जब यहां से गठबंधन के दो दो उम्मीदवार आमने-सामने खड़े हो गए। दरअसल, सीट बंटवारे के बाद हिस्से में आई इस सीट पर जेएमएम के निजामुद्दीन अंसारी बाबूलाल मरांडी को चुनौती दे रहे थे, परंतु बाद में सीपीआई के राजकुमार यादव भी धनवार के चुनावी जंग में ताल ठोंकते नजर आने लगे। जाहिर है कि एक ही सीट से एक ही गठबंधन के दो-दो प्रत्याशियों के खड़े हो जाने से आएनडीआइए गठबंधन के वोटों में बिखराव होना तय है और यदि आएनडीआइए गठबंधन ने समय रहते डैमेज कंट्रोल नहीं किया तो बाबूलाल मरांडी की विजय बेहद आसान हो जाएगी।

ऐसे ही, झारखंड के छतरपुर विधानसभा सीट के भी आएनडीआइए गठबंधन की आपसी कलह की भेंट चढ़ने के आसार दिखाई देने लगे हैं। गौरतलब है कि छतरपुर विधानसभा सीट आपसी बंटवारे में गठबंधन की ओर से कांग्रेस के हिस्से में गई थी, जिसके बाद यहां से कांग्रेस ने अपने जाने-माने नेता राधाकृष्ण किशोर को टिकट दिया। बता दें कि राधाकृष्ण किशोर कई दलों में भ्रमण करते रहने वाले नेता रहे हैं और फिलहाल वे कांग्रेस की ओर से चुनावी मैदान में हैं। इससे पहले भी छतरपुर विधानसभा सीट से ये पांच बार चुनाव जीत चुके हैं। इनमें से तीन बार कांग्रेस के कोटे से और एक बार जेडीयू तथा एक बार बीजेपी की ओर से इन्होंने विधायक बनने में सफलता पाई है। हालांकि इस बार इनकी गाड़ी आपसी विरोध और कलह-कुचाल के कीचड़ में फंसती हुई दिखाई दे रही है। दरअसल, कांग्रेस के कोटे से जैसे ही राधाकृष्ण किशोर ने अपना नामांकन पत्र भरा आएनडीआइए गठबंधन के ही नाराज पार्टनर राजद ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए। नौबत यहां तक आ गई कि राजद ने यहां से विजय राम को प्रत्याशी बना डाला। अब यहां से छठी बार अपना भाग्य आजमा रहे कांगेसी उम्मीद्वार राधाकृष्ण किशोर को यह भय सताने लगा है कि कहीं उनकी चुनावी गाड़ी बेपटरी तो नहीं हो जाएगी। बहरहाल, राज्य के विश्रामपुर, धनवार और छतरपुर विधानसभा सीटों पर यदि आएनडीआइए गठबंधन ने अपने समीकरण नही बदले और इसके उम्मीद्वार आपस में ऐसे ही भीड़ते रहे तो उन्हें चुनाव बाद कहीं यह गाना न गुनगुनाना पड़ जाए- 'मुझे तो अपनों ने लूटा, गैरों में कहां दम था, मेरी कश्ती थी वहां डूबी, जहां पानी कम था।'

(इतिश्री)

बुलडोजर चलाने के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट की सख्ती

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क के पूर्व अधिकारी हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने किसी के भी घरों पर रातोरात बुलडोजर चलाने पर सख्त नाराज़गी व्यक्त करते हुए कहा है यह क्या तरीका है कि आप मौके पर जाते हैं, ढोल बजाकर कार्रवाई की जानकारी देते हैं और फिर बुलडोजर से घर ढहा देते हैं। घर खाली करने का मौका, कोई नोटिस तक नहीं देते। यह पूरी तरह अराजकता है। इस मामले में गहन जाँच की जरूरत है।

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के महाराजगंज में 2019 में बिना नोटिस दिए घर पर बुलडोजर चलवाने के योगी सरकार की कार्रवाई पर गहरी नाराजगी जताई है। चीफ जस्टिस श्री डीव्हाय चन्द्रचूड़, जस्टिस श्री जेबी पारदीवाला और जस्टिस श्री मनोज मिश्रा की पीठ ने सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि यह अराजकता का सबसे बड़ा उदाहरण है। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने, जिसका पुस्तैनी मकान तोड़ा है, उसे अंतरिम राहत के तौर पर 25 लाख रूपए मुआवजा देने के निर्देश दिए।

उल्लेखनीय है कि मनोज टिबरेवाल के पुस्तैनी मकान को प्रशासन द्वारा बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने उसकी ओर से सीजेआई को लिखे पत्र को आधार बनाकर स्वतः संज्ञान लेते हुए राज्य सरकार से जवाब मांगा था। उत्तरप्रदेश सरकार ने कोर्ट में बताया कि ये कार्रवाई सड़क को चौड़ा करने के लिए की गई थी। सड़क के किनारे सरकारी जमीन पर 3.7 वर्ग मीटर का अतिक्रमण था, उसे ही ध्वस्त किया गया। इस पर सीजेआई श्री चन्द्रचूड़ ने असंतोष प्रकट करते हुए कहा कि इस मामले में उसे न तो नोटिस दिया गया और न ही उचित प्रक्रिया का पालन किया गया। यह पूरी तरह से सरकार की मनमानी है, अत्याचार है।

सुप्रीम कोर्ट में चर्चा के दौरान सरकारी वकील ने बताया कि वहाँ 123 अवैध निर्माण थे। इस पर जस्टिस जस्टिस श्री जेबी पारदीवाला ने कहा कि वे अवैध निर्माण है, इसका आधार क्या है ? वे मकान वहाँ 1960 से है। आप 60 सालों से क्या कर रहे थे ? सीजेआई श्री चन्द्रचूड़ ने कहा कि हमारे पास हलफनामा है, जिसमें बताया गया है कि संबंधित को कोई नोटिस जारी नहीं किया गया था। आप केवल मौके पर पहुंचे। लाउड स्पीकर से सूचित किया और मौखिक सूचना कर 123 मकान ध्वस्त कर दिए गए।

जस्टिस श्री जेबी पारदीवाला ने इस संबंध में कहा कि आपने उन्हें घर खाली करने तक का समय नहीं दिया। तोड़फोड़ में जो सामान टूटा उसका क्या ? उचित प्रक्रिया का पालन किया जाना था। आप मौके पर जाकर ढोल बजाकर किसी को घर खाली करने का नहीं कह सकते।

सीजेआई श्री चन्द्रचूड़ ने कहा कि इस पूरे मामले में गहन जाँच की जरूरत है। हम आश्चर्यचकित हैं कि जितना अतिक्रमण था, उससे ज्यादा की तोड़फोड़ की कार्रवाई क्यों की गई ? यह पूरी तरह से स्पष्ट हो गया है कि बुलडोजर से तोड़फोड़ की कार्रवाई पूरी तरह से निरंकुश और कानून के अधिकार के बिना की गई।

इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने उत्तरप्रदेश सरकार को एक महीने में दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई करने का आदेश भी दिया। यह भी स्पष्ट किया कि सरकारें अवैध निर्माण के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई के लिए स्वतंत्र हैं। सुप्रीम कोर्ट ने फिर स्पष्ट किया कि तोड़फोड़ की कार्रवाई के संदर्भ में पिछले दिनों देशभर के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा जो दिशा निर्देश जारी किए गए थे, उसका सख्ती से पालन किया जाए।

उल्लेखनीय है कि देश में सबसे पहले उत्तरप्रदेश में योगी सरकार ने अतिक्रमण पर बुलडोजर चलाने की संस्कृति इजात की थी। उत्तरप्रदेश सरकार की यह कार्रवाई देश भर में काफी चर्चित रही है। वहाँ अनेक घरों पर बुलडोजर द्वारा तोड़फोड़ की गई। किन्तु एक फरियादी मनोज टिबरेवाल द्वारा सुप्रीम कोर्ट को लिखे एक पत्र को आधार बनाकर कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए उत्तरप्रदेश सरकार से जवाब मांगा था। इस बुलडोजर संस्कृति को मध्यप्रदेश में भी शिवराज सरकार ने अनेक जगहों पर लागू कर अनेक घर ध्वस्त किए थे। सुप्रीम कोर्ट द्वारा तोड़ फोड़ पर दिशा निर्देश जारी करने के बाद अब उम्मीद की जा सकती है कि अब राज्य सरकारें बिना उचित प्रक्रिया का पालन किए घरों पर रातोंरात बुलडोजर चलाने से बाज आयेगी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बेगानों का ब्याव न दीवानों की मौज

देव जागने वाले हैं।' 'देव जागने वाले हैं।' यह कहते हुए धन्ना जी तेजी से चले जा रहे थे। रास्ते में उन्हें मिलने वाला हर व्यक्ति हैरान-परेशान था। आखिर धन्ना जी को हो क्या गया है? उनको इस तरह बड़बड़ाते हुए देखकर मैंने भी सिर पीट लिया। अरे! भई, अभी तो देव उठनी एकादशी में समय है और ये हैं कि भागे जा रहे हैं। धन्ना जी के बारे में एक बात बता दूं कि वे अपनी धुन के पक्के हैं, उन्हें जो धुन छूटती है तो फिर उन्हें कोई भी नहीं रोक सकता। हिम्मत कर मैंने आवाज लगाई तो धन्ना जी पलटे, रुके और बोले- अरे यार! क्या बताऊं एक महीने से परेशान हूं। मैंने कहा-हुआ क्या है। वे बोले-सारी धर्मशाला, मैरिज गार्डन और लॉन बुक होने जा रहे हैं। इसमें परेशान होने की क्या जरूरत है? भई, ब्याव का सीजन चालू हो रहा है तो बुकिंग तो होगी न। धन्ना जी बोले-तुम समझते नहीं हो यार! मैंने फिर पूछा तो उन्होंने कहा कि देव उठेंगे तो घर से लेकर मैरिज गॉर्डन तक धूम-धड़ाका, शोर-सपाटा होगा। इतना ही नहीं हमारे मोहल्ले के लड़के तो इतने उस्ताद हैं कि बारात किसी की भी निकले, उनके पैरों में भंवरे पड़ जाते हैं। वे हर बारात में ठूमके लगाकर ही दम लेते हैं। अरे! अपने मनमौजी लाल हैं न उसके बेटे और भतीजों ने तो इस काम के लिए किराए पर शेरवानी तक ले रखी है। बस जैसे ही किसी की बारात दरवाजे के सामने से गुजरी नहीं कि बंदों के पैर थिरकने लगते हैं और वह भी नाचने वालों की भीड़ में जलेबी में चाशनी की तरह घुल मिल जाते हैं। मैंने कहा-यह तो अच्छी बात है। इसी बहाने पड़ोसी धर्म भी तो निभ जाता है। वह बोले-काहे का पड़ोसी धर्म। कभी-कभी तो पिट-पिटाके आते हैं घर। वे जाते-जाते एक बात और बोल गए कि ब्याव किसी का भी हो, कम से कम अपने पैरों और मन तो काबू होना ही चाहिए न। अब देखिए न चुनाव अमेरिका में हुए, पटाखे हमारे यहां फूट रहे हैं। सब ऐसे बता रहे हैं जैसे कि अब हमारे यहां कि अर्थ व्यवस्था की रेल डिरेल नहीं होगी। लूप लाइन से मेन लाइन पर आ जाएगी। बेरोजगारी खत्म हो जाएगी और महंगाई का दानव शरणागत हो जाएगा। अभी तक तो लोग यही गाना गा रहे थे कि 'दोस्त दोस्त न रहा', लेकिन अब सुनाई दे रहा है 'तेरे जैसा यार कहां'। ब्याव के सीजन में दीवानों की मौज होने जा रही है। सभी के पैर थिरकने लगे हैं। बधाइयों से सोशल मीडिया के ग्रुप अघा गए हैं और डिलीट का बटन भी काम नहीं कर रहा है। धन्ना जी इतना कहते ही अंतर्ध्यान हो गए और उनकी वाणी एक वैक्यूम पैदा कर गई। उधर, मैरिज गार्डन में साफ-सफाई का दौर आरंभ हो गया और बैंडबाजे वाले प्रेक्टिस में लग गए। ढोलियों ने अपने ढोल की तान कस ली है, क्योंकि देव जागने वाले हैं।

हेलीकॉप्टर से चार दिन में पहाड़ों के चार धाम

यात्रा वृतांत

डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट

लेखक योग, ध्यान एवं अध्यात्म के प्रशिक्षक हैं।

प्रकृति के तहत संस्कृति की रक्षा यदि पराकाष्ठा कही जाए तो वह भारत में मौजूद है। यहां पेड़, पौधे, हवा, पानी, आकाश, अग्नि, धरती, सूरज, पहाड़ सब पूजे जाते हैं। ''पाथर पूजे हरी मिले, तो मैं पूजू पहाड़ घर की चक्की कोई न पूजे, जाको पीस खाए संसार'' में कबीर की वाणी में निराकार के प्रति आसक्ति मिलती हों फिर भी जो पहाड़ों से जुड़ी है आस्था हमें आगे की ओर ले जाती है और वहाँ भी हम उस आदि अनंत को ढूंढते हैं। आस्था एक ऐसी वृत्ति है जो यह नहीं देखती कि किसके प्रति है, वह यह देखती है कि लगन कितनी है, संकल्प शक्ति कितनी है, श्रद्धा कितनी है। संकल्प शक्ति, श्रद्धा और लगन ही जीवन को जीवंत रखने के लिए अनिवार्य है। इन्हे पाने के लिए कोई भी प्रतीक हो सकते हैं। अब पहाड़ों को ही ले लो, कितने ही लोग पहाड़ों की ओर खिंचे चले आते हैं।

पहाड़ों की भूमि देवभूमि उत्तराखंड

उत्तराखण्ड के चार धाम देश विदेश की विभिन्न संस्कृतियों का अद्भुत धार्मिक मिलन स्थल हैं। ये उत्तर और दक्षिण भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक एकता के भी प्रतीक हैं। शंकराचार्य ने आठवीं सदी में हिमालय स्थित उत्तर की पीठ जोशीमठ की स्थापना के साथ ही उत्तर और दक्षिण को जोड़ने के उद्देश्य से बद्रीनाथ की पूजा के लिए दक्षिण भारत के केरल प्रदेश के नम्बूदरी ब्राह्मण को रावल बनाने की व्यवस्था भी कर दी। यह मुख्य रूप से हिमालय पर्वतीय क्षेत्रों की ढलानों पर स्थित एक पहाड़ी शहर है, जिसकी उत्तर में चीन (तिब्बत) और पूर्व में नेपाल के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ हैं। यह राज्य चार सबसे महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित हिंदू मंदिरों का घर है- यमुनोत्री, बद्रीनाथ, गंगोत्री और केदारनाथ। यह वास्तव में भगवान की भूमि (देव भूमि) है। उत्तराखंड को देवभूमि या 'देवताओं की भूमि' के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यह कई हिन्दू पवित्र स्थलों का घर है। इसके अलावा, उत्तराखंड को प्राचीन काल से देवभूमि के रूप में जाना जाता है, और वर्तमान में यह राज्य भारत में देवभूमि उत्तराखंड के रूप में जाना जाता है। देवभूमि उत्तराखंड भी हिमालय क्षेत्र का हिस्सा है। देवभूमि उत्तराखंड का पर्वतीय क्षेत्र और घाटियाँ भी देवी-देवताओं का घर हैं। भारत की सबसे लंबी और पवित्र नदी गंगा उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में गंगोत्री ग्लेशियर से बहती है।

कब शुरू हुई चार धाम यात्रा

आज लाखों की संख्या में लोग चारधाम यात्रा के लिए पहुंचते हैं। कहा जाता है कि 8वीं-9वीं सदी में आदि गुरु शंकराचार्य ने बद्रीनाथ की खोज की थी। उन्होंने ही धार्मिक महत्व के इस स्थान को दोबारा बनाया था। बताया जाता है कि भगवान बद्रीनाथ की मूर्ति यहां तप्त कुंड के पास एक गुफा में थी और 16वीं सदी में गढ़वाल के एक राजा ने इसे मौजूदा मंदिर में रखा था। जबकि केदारनाथ भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। स्थानीय लोग चारों धामों में श्रद्धा पूर्वक जाते थे, लेकिन 1950 के दशक में यहां धार्मिक पर्यटन के लिहाज से आवाजाही बढ़ी। 1962 के चीन युद्ध के चलते क्षेत्र में परिवहन की व्यवस्था में सुधार हुआ तो चारधाम यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या भी बढ़ने लगी।

किसने की चारों धामों की स्थापना

स्कंद पुराण के अनुसार गढ़वाल को केदारखंड कहा गया है। केदारनाथ का वर्णन महाभारत में भी है। महाभारत युद्ध के बाद पांडवों के यहां पूजा करने की बातें सामने आती हैं। माना जाता है कि 8वीं-9वीं सदी में आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा मौजूदा मंदिर को बनवाया था। बद्रीनाथ मंदिर के बारे में भी स्कंद पुराण और विष्णु पुराण में वर्णन मिलता है। बद्रीनाथ मंदिर के वैदिक काल (1750-500 ईसा पूर्व) भी मौजूद होने के बारे में पुराणों में वर्णन है। कुछ मान्यताओं के अनुसार 8वीं सदी तक यहां बौद्ध मंदिर होने की बात भी सामने आती है, जिसे बाद में आदि गुरु शंकराचार्य ने हिंदू मंदिर में दिया।

गंगा को धरती पर लाने का श्रेय पुराणों के अनुसार राजा भगीरथ को जाता है। गोरखा लोग (नेपाली) ने 1790 से 1815 तक कुमाऊं-गढ़वाल पर राज किया था, इसी दौरान गंगोत्री मंदिर गोरखा जनरल अमर सिंह थापा ने बनाया था। उधर यमुनोत्री के असली मंदिर को जयपुर की महारानी गुलेरिया ने 19वीं सदी में बनवाया था। हालांकि कुछ दस्तावेज इस ओर भी इशारा करते हैं कि पुराने मंदिर को टिहरी के महाराज प्रताप शाह ने बनवाया था। मौसम की मार के कारण पुराने मंदिर के टूटने पर मौजूदा मंदिर का निर्माण किया गया है।

यात्रा का पहला दिन

देहरादून में सहस्त्रधारा में बने हेलीपेड से यात्रा प्रारंभ होती है। यहाँ से पहली उड़ान हेलीकाप्टर भरता है और लगभग पैतरलीस मिनिट में खरसाली पहुँचा देता है जहाँ से यमनोत्री छ: किमी दूर है। खरसाली पहुँच कर पहाड़ी सामान्य से होटल में विश्राम के बाद पैदल, घोड़े, डोली आदि से यात्रा कर सकते हैं। पहाड़ों के बीच हेलीकॉप्टर जब उतरता है तो ऐसा लगता है कि प्रकृति की गोद में समाने जा रहे हैं। रास्ते में विशालकाय हिमालय के असली दर्शन होते हैं। कहीं कहीं दूर बर्फ से ढँकी पहाड़ों की चोटियाँ, छोटे-छोटे दिखाई देते पहाड़ी खेत-खलियान और गांव कस्बे। कहीं हवा कर तीव्र वेग झुरझुरी सी पैदा करता है तो कहीं दूर गगन में पंछी की बराबरी करते हम इठलाते हैं। रास्ते भर छोटी-छोटी दुकाने जहाँ नाश्ता, चाय मिल जाती है और सबसे बड़ी बात है कि यहाँ की चढ़ाई थोड़ी खड़ी है और कई जगह रूककर आराम भी करना होता है। जैसे-जैसे ऊपर जाते हैं ठंडक और बढती जाती है। पहाड़ों से पिघलती बर्फ हमें लालायित करती है तो दूर गगन में सूरज भी मध्यम हुआ जाता है।

यमुनोत्री वह स्थान है जहाँ भारत की दूसरी सबसे पवित्र नदी यमुना का उद्गम होता है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में स्थित यमुनोत्री धाम तीर्थयात्रा का पहला पड़ाव है। ऐसा माना जाता है कि इसके जल में स्नान करने से सभी पाप धुल जाते हैं और असामयिक और दर्दनाक मृत्यु से रक्षा होती है। माना जाता है कि यमुनोत्री मंदिर का निर्माण 1839 में टिहरी के राजा नरेश सुदर्शन शाह ने करवाया था। यमुना देवी (देवी) के अलावा, गंगा देवी की मूर्ति भी प्रतिष्ठित मंदिर में स्थापित है। मंदिर के पास कई गर्म पानी के झरने हैं; सूर्य कुंड उनमें से सबसे महत्वपूर्ण है। भक्त कुंड में चावल और आलू उबालते हैं और इसे देवी के प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। दंतकथा है कि यमुना देवी को सूर्य की पुत्री और यम (मृत्यु के देवता) की जुड़वां बहन माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि ऋषि असित मुनि यहीं रहते थे और गंगा और यमुना दोनों में स्नान करते थे। वृद्धावस्था में जब वे गंगोत्री जाने में असमर्थ थे, तो यमुना की धारा के पार गंगा की एक धारा बहने लगी।

यात्रा का दूसरा दिन

खरसाली से दूसरे दिन हेलीकॉप्टर उड़ान भरता है और करीब आधे घंटे में हर्षिल गांव तक ले आता है जहाँ से गंगोत्री करीब पच्चीस किमी दूर है। होटल में स्टे के बाद आपको चार पहिया वाहन लेने आता है और ले जाता है गंगोत्री की ओर। पहाड़ों के बीच उँचे-नीचे रास्तों और भारी ट्रेफिक के बीच गाड़ी आगे बढ़ती है और डेढ़ घंटे में गंगोत्री पर ले जाती है। लगभग 200 मीटर आगे पैदल चलने पर मंदिर आ जाता है। और पास ही नवयौवना की तरह गंगा नदी बह रही होती है। नहाने के लिए विशेष साहस की आवश्यकता होती है क्योंकि पानी इतना ठंडा होता है कि दांत बजने लगें।

गंगोत्री धाम देवी गंगा को समर्पित है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे मानव जाति के पापों को दूर करने के लिए धरती पर अवतरित हुई थीं। यह नदी गंगोत्री ग्लेशियर से गोमुख से निकलती है जो गंगोत्री शहर से लगभग 18 किमी दूर है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में स्थित गंगोत्री का मूल मंदिर 19वीं शताब्दी की शुरुआत में एक गोरखा जनरल अमर सिंह थापा द्वारा बनाया गया था। दंतकथा है कि राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया और घोड़े के साथ अपने 60,000 पुत्रों को भेजा। घोड़ा खो गया था; घोड़े को ऋषि कपिल के

आश्रम में खोजते हुए, 60,000 पुत्रों ने आश्रम पर धावा बोल दिया और गहन ध्यान में लीन ऋषि को परेशान कर दिया। क्रोधित कपिला ने अपनी ज्वलंत आंखें खोलीं जिससे सभी 60,000 पुत्र राख में बदल गए। बाद में, कपिल की सलाह पर, अंशुमान (सागर के पोते) ने देवी गंगा से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, उनसे अपने रिश्तेदारों की राख को साफ करने और उन्हें मोक्ष प्रदान करने के लिए पृथ्वी पर आने का अनुरोध किया। अंशुमान अपने उद्देश्य में विफल रहे; यह उनके पोते भगीरथ थे जिनके कठोर ध्यान ने गंगा को पृथ्वी पर उतारा। भगवान शिव ने गंगा को बांध दिया और पृथ्वी को अपनी शक्तिशाली शक्ति से बचाने के लिए इसके जल को कई धाराओं में वितरित किया।

यात्रा का तीसरा दिन

हर्षिल से उड़ान भरकर हेलिकॉप्टर आपको गुप्तकाशी, फाटा या फिर सिरसी में स्टे के लिए उतारते हैं। यहीं से आपको केदारनाथ ले जाकर वापिस लाया जाता है। सिरसी से हमने उड़ान भरी केदारनाथ के लिए पहाड़ों के बीच से होते हुए इस अद्भूत जगह केदारनाथ के सामने की ओर हेलीपेड पर हैलीकॉप्अर उतरता है। सामने ही केदारनाथ का मंदिर दिखाई देता है। चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच मंदिर और 2013 अनायास याद आ जाता है जब यहाँ भारी बारिश में तबाही लाई थी। आगे बढ़ते हैं तो मंदिर में दर्शन के लिए लाईन की व्यवस्था होती है और वीआईपी दर्शन की भी। मंदिर के पीछे आदि शंकर की याद में मेमोरियल के अलावा हादसे में मंदिर के पीछे एक चट्टान भी दिखाई देती है जिसे भीम शिला कहा जाता है और माना जाता है कि उस हादसे ने इस मंदिर को इसी चट्टान ने जादुई रूप से बचाया था।

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ यात्रा का सबसे दुर्गम तीर्थ स्थल है। ऐसा माना जाता है कि मूल रूप से केदारनाथ मंदिर का निर्माण पांडवों ने करवाया था। और आदि शंकराचार्य ने पुराने मंदिर स्थल के समीप 8वीं शताब्दी में वर्तमान संरचना का निर्माण करवाया था। भूरे पत्थर की यह संरचना अपने भव्य डिजाइन और इतने कठोर भूभाग में कई शताब्दियों तक टिके रहने की क्षमता के कारण एक वास्तुशिल्प चमत्कार है। दंतकथा है कि महाभारत के युद्ध के मैदान में किए गए पापों से मुक्ति पाने के लिए पांडव भगवान शिव की खोज कर रहे थे। भगवान शिव उन्हें इतनी आसानी से माफ करने के मूड में नहीं थे, इसलिए उन्होंने खुद को एक बैल में बदल लिया और उत्तराखंड के गढ़वाल की ओर चले गए। पांडवों द्वारा खोजे जाने पर, उन्होंने जमीन में गोता लगाया। भगवान के अलग-अलग अंग अलग-अलग जगहों पर उभरे - केदारनाथ में कूबड़, तुंगनाथ में भुजाएँ, मध्य-महेश्वर में नाभि, रुद्रनाथ में मुख और कल्पेश्वर में बाल उभरे। इन पाँचों स्थलों को एक साथ मिलाकर पंच-केदार के नाम से जाना जाता है। पांडवों ने पाँचों स्थानों पर मंदिर बनवाए।

दंतकथा है कि शिव जी के इस धाम का इतिहास भगवान विष्णु के अवतार नर-नारायण, पांडव और आदि गुरु शंकराचार्य से जुड़ा है। ये मंदिर हिमालय क्षेत्र में है, इस वजह से शीत ऋतु के समय करीब 6 महीने बंद रहता है और ग्रीष्म ऋतु के समय भक्तों के लिए खोला जाता है। केदारनाथ धाम से जुड़ी कई मान्यताएं प्रचलित हैं। शिवपुराण की कोटिरुद्र संहिता में लिखा है कि पुराने समय में बदरीवन में विष्णु भगवान के अवतार नर-नारायण पार्थिव शिवलिंग बनाकर भगवान शिव का रोज पूजन करते थे।

यात्रा का चौथा दिन

चौथे दिन बद्रीनाथ के हेलीपैड जो कि मंदिर से पॉच सौ मीटर की दूर पर स्थित है पर हेलिकॉप्टर उतरता है और होटल स्टे के बाद दर्शन के लिए जाते हैं। अलकनंदा नदी के पास गढ़वाल की पहाड़ियों में 10,279 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह मंदिर बर्फ से ढके हिमालय और विचित्र परिवेश के सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है।देवी.देवताओं की विभिन्न मूर्तियों के अलावा बद्रीनाथ मंदिर में भगवान विष्णु की 1 मीटर ऊंची काले पत्थर की मूर्ति है, जिसे आठ स्वयं प्रकट क्षेत्रों, स्वयं प्रकट मूर्तियों में से एक माना जाता है। विष्णु मंदिर में एक राजसी द्वार है जिसे चमकीले रंगों से रंगा गया है। मंदिर में एक तप्त कुंड; गर्म पानी का झरना भी है, जिसके बारे में माना जाता है कि उसमें औषधीय गुण हैं।

बद्रीनाथ को हिंदू धर्म में सबसे पवित्र स्थानों में से एक माना जाता है। 108 दिव्य देशमों में से एक, बद्रीनाथ मंदिर चार धाम और छोटा चार धाम दोनों का हिस्सा है। आदि शंकराचार्य ने अलकनंदा नदी में भगवान बद्री की मूर्ति पाई और उसे तप्त कुंड के पास एक गुफा में स्थापित किया। 16वीं शताब्दी में, एक गढ़वाल राजा ने मंदिर बनवाया, जिसका प्राकृतिक आपदाओं के परिणामस्वरूप कई बार जीर्णोद्धार किया गया। नर और नारायण चोटियों के बीच स्थित, बद्रीनाथ धाम की सुंदरता नीलकंठ चोटी की शानदार पृष्ठभूमि से और भी बढ़ जाती है। दंतकथा है कि एक किंवदंती के अनुसार, भगवान विष्णु की भोगवादी जीवनशैली की एक ऋषि ने आलोचना की थी, जिसके बाद विष्णु तपस्या के लिए यहाँ ध्यान करने चले गए। देवी लक्ष्मी (उनकी पत्नी) उन्हें सूरज और प्रकृति के अन्य कठोर तत्वों से बचाने के लिए एक बेर के पेड़ में बदल गईं। एक अन्य दिव्य कथा में कहा गया है कि बद्रीनाथ शिव का राज्य हुआ करता था। विष्णु ने शिव को धोखा देकर इस स्थान को छोड़ दिया और इसके स्थान पर खुद को स्थापित कर लिया।

बद्रीनाथ के आसपास घूमने के लिए अन्य स्थान

वसुधारा झरना: वसुधारा झरना बद्रीनाथ से 9 किमी दूर स्थित है। इस झरने की ऊँचाई लगभग 400 फीट है और यह अलकनंदा नदी में मिल जाता है। वसुंधरा अपनी शांत सुंदरता के कारण हाइकिंग के शौकीनों के बीच लोकप्रिय है। पर्यटक इस सुदूर स्थान तक पहुँचने के लिए माना गाँव से 6 किमी की चढ़ाई कर सकते हैं। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि केवल वे ही झरने की सुंदरता का आनंद ले सकते हैं जो किसी भी अपराध या दुर्भावना से रहित हैं।

पंच धारा: पंच धारा पांच धाराओं के समूह को संदर्भित करती है जो बद्रीनाथ से निकलती हैं। प्रह्लाद धारा, उर्वशी धारा, कूर्म धारा और इंदिरा धारा, पंच धाराओं का निर्माण करती हैं। भृगु धारा कई गुफाओं से होकर गुजरती है, जबकि प्रह्लाद धारा में गर्म पानी है। जिस स्थान पर वे मिलते हैं, उसे हिंदुओं द्वारा शुभ माना जाता है।

व्यास गुफा: बद्रीनाथ से कुछ किलोमीटर दूर चमोली में स्थित व्यास गुफा एक प्राचीन गुफा है। ऐसा माना जाता है कि हिंदू महाकाव्य महाभारत की रचना भगवान गणेश की मदद से ऋषि व्यास ने इसी गुफा में की थी।

नीलकंठ चोटी: पर्वतारोहियों के बीच लोकप्रिय नीलकंठ हिमालय के एक हिस्से गढ़वाल मंडल की एक प्रमुख चोटी है। गढ़वाल की रानी के नाम से मशहूर यह बर्फ से ढका पहाड़ बद्रीनाथ से 11398 फीट ऊपर स्थित है।

पांडुकेश्वर: जोशीमठ से 18 किलोमीटर दूर स्थित पांडुकेश्वर को महाभारत काल से जुड़ा एक पवित्र स्थल माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि राजा पांडु (पांडवों के पिता) ने यहां भगवान शिव की पूजा की थी। आज, यहां दो प्रसिद्ध मंदिर हैं, योग ध्यान बद्री मंदिर (जो उत्सव-मूर्ति को समर्पित है) और भगवान वासुदेव मंदिर, जिसके बारे में आमतौर पर माना जाता है कि इसे पांडवों ने बनवाया था।

माना गांव: भारत और तिब्बत/चीन के बीच सीमा के पास आखिरी भारतीय गांव माना जाता है, माना चमोली जिले में बद्रीनाथ से 3 किमी दूर स्थित है। उत्तराखंड सरकार ने माना को 'पर्यटन गांव' के रूप में मान्यता दी है। हिमालय में बसा यह सुंदर गांव समुद्र तल से 3219 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और सरस्वती नदी के तट पर स्थित है।

पांडवों ने यहीं से स्वर्गारोहण किया

आदि गुरु शंकराचार्य हों या फिर उससे पहले पाण्डवों का प्रायश्चित और स्वर्गारोहण के लिए आगमन, नगाधिराज हिमालय की गोद में उत्तुंग तुंग श्रृंगों के बीच बसे उत्तराखंड के तीर्थ और इसकी दिव्य संरचना युगों - युगों से धर्मपरायण और आत्मिक शांति की खोज के लिए निकले मानवों को आकर्षित करते रहे हैं और यह सिलसिला अब भी जारी है। मान्यता है कि महाभारत युद्ध के बाद गोत्र हत्या के पाप से मुक्ति के लिए पाण्डव शिव की उपासना के लिए उत्तराखंड पहुंचे थे। केदारनाथ में नंदी के रूप में आखिर उन्हें शिव के दर्शन हुए। आज भी वहां पाण्डवों द्वारा निर्मित पाषाण मंदिर मौजूद है। इसके बाद पाण्डव गंगा की मुख्यधारा अलकनंदा के किनारे-किनारे होते हुए बद्रीनाथ की ओर से सतोपंथ ग्लेशियर से स्वर्गारोहण कर गए।

सेवानिवृत्ति जीवन का सुखद पड़ाव

आयोजन

डॉ. घनश्याम बटवाल

लालबहादुर श्रीवास्तव कल भी श्रेष्ठ थे आज भी श्रेष्ठ हैं। आपने नैतिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए शासन प्रशासन को अपनी कला साहित्य संगीत नवाचारों से, विविध विधाओं से अनुकरणीय श्रेष्ठ सेवाएं शानदार 41 सालों की शासकीय सेवाओं में समर्पित भाव से दी है।सेवानिवृत होकर नये पड़ाव की ओर अपने कदम रख रहे हैं। आप सृजनरत रहते हुए समाज को नई दिशा प्रदान करते रहें। उक्त उद्बोधन पूर्व कमीश्नर (ग्वालियर चंबल संभाग) आशीष सक्सेना ने जनपद पंचायत में पदस्थ सेवानिवृत्त सहायक विकास विस्तार अधिकारी लालबहादुर श्रीवास्तव के 'सेवानिवृत्ति साहित्य उत्सव सम्मान समारोह' शुभकामना रिसोर्ट में आयोजित सम्मान समारोह में व्यक्त किए।

साहित्य सम्मान में उपस्थित साहित्यकार व्यंग्यकार आशीष दशोत्तर रतलाम ने लालबहादुर श्रीवास्तव की दो कृतियां 'शब्द शिल्प काव्य रेखांकन संग्रह, एवं 'व्यंग्य तरंग' को रेखांकित करते हुए कहा-लालबहादुर श्रीवास्तव जी एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने सरकार में रहते हुए अपनी लेखनी को प्रभावी और असरदार बनाए रखा है। व्यक्ति अभाव में भी लिखता है , दबाव में भी लिखता है,प्रभाव में भी लिखता है,स्वभाव में भी लिखता है,श्रीवास्तव जी की कविताएं स्वभाव की कविताएं हैं। जो व्यक्ति स्वभाव से लिखता है वो शिष्ट भी होता है, मिष्ट भी होता है निष्ट भी होता है। ये तीन व्यक्तित्व किसी एक व्यक्ति को परिपूण बनाते हैं,जो शिष्टाचार भी निभाता है,मधुरता की बात भी करता है जो अपनी निष्ठाओं को भी निभाता है।इनकी रचनाओं को आप पढ़ेंगे तो अपनी जिंदगी के करीब इन्हें पायेंगे। कविताओं के साथ आपने सुंदर रेखांकनों से कविताओं को और भी प्रभावी बनाया है।

समर्पित अधिकारी कलमकार अपना श्रेष्ठ योगदान न देते तो शायद ही हम इन्हें धरातल पर साकार करने में इतने सफल होते। इन सालों में एक भी ग्रामीण व्यक्ति जनप्रतिनिधि ने कभी भी मेरी विधानसभा में आपका लिखा मध्यप्रदेश पर्यटन गीत म्हारा मंदसौर मे थांको अभिनंदन है, जय जय मध्यप्रदेश प्रदेश की अनुगूंज है।

ऐसे ईमानदार सेवाभावी लालबहादुरजी की सुसेवा निस्वार्थ भाव से की है। डॉ. जे के जैन ने विशेष रूप से सम्मान समारोह में कहा शासकीय कार्यों के अलावा हर शासकीय पर्व पर अपनी प्रस्तुतियां देकर शासन की हर योजनाओं में अभियानों में आपने लेखनी से बेहतर काम किया है। मुख्यमंत्री प्रवास पर आपने उन्हें भेंट किये जाने वाले कई अभिनंदन पत्र बनाए है।आपकी श्रेष्ठ सेवाएं प्रशासन स्मरण रखेगा।

पूर्व विधायक यशपाल सिंह सिसोदिया ने कहा-शासकीय योजनाओं,अभियानों ,निर्वाचनों, लोक उत्सवों, विकास यात्राओं में पिछले 41 सालों से अपनी कलम कूंची से अगर लालबहादुरजी जैसे आपकी शिकायत आकर मुझसे नही की बल्कि आपके कार्यों की सदैव सराहना की है।मेरी विकास यात्राओं, कार्यक्रमों को आपने अपनी रचनाओं से श्रेष्ठ मंच संचालन शैली से हमेशा सफल बनाया है। सेवानिवृति उनके सुखद कायों की सुखद परिणिती है।

विधायक विपिन जैन ने कहा कि आपके जनप्रतिनिधियों से सुमधुर सम्बंध रहे हैं आपने जनकल्याणकारी योजनाओं में ग्रामीणजनो की

अपने सेवानिवृत्ति साहित्य उत्सव सम्मान समारोह में स्वागत उद्बोधन देते हुए लालबहादुर श्रीवास्तव ने कहा -साहित्य संगीत कला ने जीवन में सुंदर रंग कलम कूंची से जीवन में भरें । सेवानिवृत्ति एक सुखद पड़ाव है।मेरी शासकीय सेवा में मेरी लेखनी को सदैव प्रोत्साहित करने वाले मित्र आशीष सक्सेना, डॉ. जे के जैन श्री यशपालसिंह सिसोदिया जैसे वरिष्ठ अधिकारी विधायक हैं जिनके मार्गदर्शन में निरन्तर श्रेष्ठ कार्य करने का प्रोत्साहन मिलता रहा। आपने काव्य कृतियों पर विशेष सहयोग के लिए श्री यशवंत व्यास प्रसिद्ध व्यंग्यकार ,डाक्टर देवेंद्र शर्मा कार्टूनिस्ट डॉ. घनश्याम वरिष्ठ पत्रकार के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस प्रसंग पर आपने अपना सुमधुर गीत मैं शिवना सा कल कल मन अन्मतरमन बहता रहता हूं सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

अतिथियों का स्वागत राजेंद्र श्रीवास्तव मुकुंद श्रीवास्तव माधव श्रीवास्तव द्वारा किया गया। बांसुरी पर सरस्वती वंदना एंव गीतों की प्रस्तुती रवि श्रोत्रिय, माउथ आर्गन पर आंनद श्रीवास्तव व अनिल त्रिवेदी ने दी। माधव श्रीवास्तव द्वारा लालबहादुर श्रीवास्तव के सेवाकाल में श्रेष्ठ कार्यों की सेवा यात्रा का वीडियो एलडीटीवी स्कीन पर प्रदशित किया गया।

कलेक्टर ने 2 आदतन अपराधियों को किया जिला बदर

बैतूल। कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट बैतूल नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने 2 आदतन अपराधियों को जिला बदर किया है। राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 (क) एवं (ख) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कलेक्टर ने शिवप्रसाद पिता गुलाब यादव, उम्र 45 साल, निवासी ग्राम डोडावानी, थाना आमला एवं विक्की उर्फ एहफाज खान पिता रसीद खान, उम्र 32 साल, निवासी नेहरु वार्ड, भैंसदेही को जिला बैतूल एवं उससे लगे सीमावर्ती जिले छिंदवाड़ा, नर्मदापुरम, खण्डवा एवं हरदा की राजस्व सीमाओं से 01 (एक) वर्ष की अवधि के लिए निष्कासित किया हैं।

स्वीप आइकॉन सारिका घारू ने मतदाता सूची में अपना नाम जुड़वाने नव मतदाताओं को किया प्रेरित

बैतूल। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर मतदाता सूची में विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2025 के तहत जिले में स्वीप जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। स्वीप आईकॉन सारिका घारू ने मतदाता सूची में अपना नाम जुड़वाने के लिए नवमतदाताओं को जागरूक किया। बैतूल जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित कार्यक्रम में सारिका ने जानकारी दी कि अगर आपकी उम्र 18 साल हो रही है तो आप अपना नाम मतदाता सूची में जुडवा सकते हैं। इसके लिये भारत निर्वाचन आयोग द्वारा बीएलओ के माध्यम से नाम जुड़वाने, संशोधन करवाने और नाम हटवाने का कार्य किया जा रहा है। इसलिए 16, 17 नवम्बर को विशेष शिविर का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा अन्यम जानकारी के लिये टोल फ्री नम्ब्र 1950 पर कॉल भी किया जा सकता हैं।

जिला स्तरीय निःशुल्क हृदय रोग शिविर आज

बैतूल। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम अंतर्गत जन्म से लेकर 18 वर्ष तक के हितग्राहियों हेतु निःशुल्क हृदय रोग स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आज 16 नवम्बर को डीईआईसी जिला चिकित्सालय परिसर बैतूल, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सेहरा, शाहपुर, घोड़ाडोंगरी तथा चिचोली विकासखंड में प्रातः 10 बजे से आयोजित किया जाएगा। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उइके ने बताया कि 20 नवंबर 2024 को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भीमपुर, भैंसदेही, आठनेर, आमला, मुलताई, प्रभात पट्टन एवं शहरी क्षेत्र बैतूल में भी शिविर आयोजित किया जाएगा।

सीएमएचओ डॉ.उईके ने बताया कि शिविर में हृदय रोग बीमारी के संभावित लक्षण नवजात बच्चे का होंठ, नाखून, हथेली का नीला पड़ जाना, सीने में दर्द होना एवं बच्चे का वजन न बढ़ना, चक्कर आना एवं थकान महशूस होना, सांस लेने में तकलीफ होना, सांस फूलना, खेलते-कूंदते समय जल्दी थक जाना, हाथ एवं पैर की अंगुलो के अग्रिम हिस्से में सूजन व नीला पड़ जाना का परीक्षण किया जाएगा। अधिक जानकारी के लिये जिला प्रबंधक आरबीएसके श्री योगेन्द्र कुमार के मोबाइल नं. 9329553382 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मां ताप्ती मेला के आयोजन हेतु कलेक्टर ने मेला अधीक्षक एवं सहायक मेला अधीक्षक किए नियुक्त

आवश्यक व्यवस्थाओं के लिए विभिन्न विभागों के अधिकारियों को सौंपे गए दायित्व

बैतूल। जिले के अनुभाग मुलताई अंतर्गत 15 नवंबर से 14 दिसंबर तक मां ताप्ती मेले का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर बैतूल श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने आदेश जारी कर नगर पालिका सीमा मुलताई अंतर्गत मेला लगाए जाने की स्वीकृति तथा मेला अधीक्षक एवं सहायक मेला अधीक्षक नियुक्त किए है। साथ ही विभिन्न विभागों को आवश्यक व्यवस्थाओं के लिए निर्देशित किया है।

जारी आदेशानुसार मुख्य नगरपालिका अधिकारी मुलताई को मेला अधीक्षक और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत मुलताई को सहायक मेला अधीक्षक नियुक्त किया गया है। इसी के साथ मेले में शांति एवं कानून व्यवस्था का दायित्व अनुविभागीय दंडाधिकारी मुलताई, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस मुलताई, तहसीलदार एवं कार्यपालिक दंडाधिकारी मुलताई तथा थाना प्रभारी मुलताई को सौंपा गया हैं। इसी प्रकार पेयजल के लिए कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग बैतूल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत मुलताई एवं अनुविभागीय अधिकारी लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मुलताई, चिकित्सा व्यवस्था के लिए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बैतूल तथा खंड चिकित्सा अधिकारी मुलताई, विद्युत व्यवस्था के लिए अधीक्षण यंत्री एमपीईबी, मेले में दुकान एवं अन्य व्यवस्था के लिए मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत मुलताई तथा महिला एवं बच्चों के उचित व्यवस्था के लिए परियोजना अधिकारी एकीकृत महिला बाल विकास मुलताई को दायित्व सौंपा गया हैं।

शासकीय कॉलेज शाहपुर में मनाया गया गौरव दिवस

शाहपुर। शासकीय कॉलेज शाहपुर में आज शुक्रवार 15 नवंबर 2024 को गौरव दिवस मनाया गया। इस शुभ अवसर पर कॉलेज के अधिकारी कर्मचारियों ने साथ में जन भागीदारी के अध्यक्ष नितिन महतो के द्वारा भगवान बिरसा मुंडा के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर इस गौरव दिवस को मनाया गया। हालांकि शासकीय अवकाश होने के कारण कॉलेज में छात्र-छात्राओं की संख्या ज्यादा नहीं थी। और इसी गौरव दिवस के उपलक्ष में जन भागीदारी के अध्यक्ष नितिन महतो शाहपुर ने अपने सुविचार रखें।

गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2425 रुपये

बैतूल। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 के लिये गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 2425 रूपये घोषित किया गया है। यह गत वर्ष से 150 रूपये अधिक है। रबी विपणन वर्ष 2025-26 के लिये अब किसानों से समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के लिए विभाग द्वारा तैयारी प्रारम्भ कर दी गई है। इसके अंतर्गत गेहूं उपार्जन के लिए बारदाना, भंडारण, परिवहन की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही भारत सरकार द्वारा निर्धारित एफएक्यू मापदंड के गेहूं उपार्जन के लिए केन्द्रों पर मैकेनाइज्ड क्लीनिंग व्यवस्था की जाएगी। गेहूं की गुणवत्ता के परीक्षण के लिये सर्वेयर को सघन प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मां ताप्ती की चुनरी पद यात्रा में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

श्रद्धा और आस्था के साथ मां ताप्ती को अर्पित की चुनरी, पूर्व विधायक निलय डागा के नेतृत्व में ताप्ती चुनरी यात्रा का भव्य आयोजन

संजय द्विवेदी, बैतूल। कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर पूर्व विधायक निलय विनोद डागा और उनकी पत्नी श्रीमती दीपाली निलय डागा के नेतृत्व में आयोजित 8वीं ताप्ती चुनरी पद यात्रा में श्रद्धा और आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। किसानों और गरीब वर्ग की समृद्धि की कामना के लिए आयोजित इस धार्मिक यात्रा में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। चुनरी पद यात्रा की शुरुआत 15 नवंबर को प्रातः 7 बजे बैतूल के लक्ष्मी चौक स्थित प्राचीन शिव मंदिर में पूजन-अर्चन के साथ हुई। यह यात्रा थाना चौक, टिकारी अखाड़ा चौक, कारगिल चौक, सदर, ग्राम धनोरा, भड़ूस, महदगांव, डहरगांव और खेडी गांव से होते हुए दोपहर 3 बजे ताप्ती घाट पहुंची। ताप्ती घाट पर सूर्यपुत्री और जीवनदायिनी मां ताप्ती को चुनरी अर्पित की गई। इसके बाद विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की। यात्रा के दौरान श्रद्धालु जय माता ताप्ती के जयकारे लगाते हुए उत्साह के साथ नाचते-गाते आगे बढ़ते रहे। यात्रा में डीजे की धुन ने माहौल को और अधिक भव्य बना दिया। श्रद्धालुओं का जोश देखते ही बनता था।

पूर्व विधायक निलय डागा ने बताया कि इस यात्रा का उद्देश्य मां ताप्ती की महिमा का प्रचार-प्रसार करना और क्षेत्र के किसानों एवं गरीब वर्ग की खुशहाली के लिए प्रार्थना करना है। उन्होंने 11 वर्षों तक यह यात्रा आयोजित करने का संकल्प लिया है। पिछले 7 वर्षों से श्री डागा और श्रीमती दीपाली डागा इस यात्रा का सफलतापूर्वक आयोजन कर रहे हैं। आज यह यात्रा बैतूल जिले के प्रमुख धार्मिक आयोजनों में शामिल हो चुकी है।

महिलाओं और युवाओं की विशेष भागीदारी

इस यात्रा में महिलाओं, युवाओं और किसानों की बड़ी संख्या में भागीदारी देखने को मिली। श्रद्धालु ताप्ती घाट पर चुनरी अर्पित कर मां ताप्ती का आशीर्वाद लेने पहुंचे। पूर्व विधायक निलय डागा और श्रीमती दीपाली डागा ने यात्रा में भाग लेने वाले समस्त श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया और इस आयोजन को उनकी आस्था और सहयोग का परिणाम बताते कहा कि ताप्ती चुनरी पद यात्रा, श्रद्धा, आस्था और क्षेत्रीय समृद्धि के लिए प्रार्थना का प्रतीक बन चुकी है। चुनरी यात्रा में प्रमुख रूप से श्रद्धालु प्रशांत मरोठी, लोकेश पगारिया, उषभ गोठी, अमित गोठी, अजित पटेल, अनूप वर्मा, शिवशंकर मालवीय, प्रेरणा शर्मा, नंदिनी तिवारी, डैनी भावसार, डॉ विनय चौहान, बब्बा राठौर, प्रशांत राजपूत, नारायण सरले, राजकुमार दीवान सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

200 जगह हुआ चुनरी पद यात्रा का भव्य स्वागत, श्रद्धालुओं के लिए विशेष इंतजाम

बैतूल जिला मुख्यालय से मां ताप्ती घाट तक लगभग 200 स्थानों पर चुनरी पद यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। श्रद्धालुओं के लिए विभिन्न स्थानों पर स्वल्पाहार और जलपान की विशेष व्यवस्था की गई थी। जगह-जगह पुष्प वर्षा कर श्रद्धालुओं का सम्मान किया गया। गांव-गांव में श्रद्धालुओं का जोश और उत्साह देखने लायक था। यात्रा के स्वागत में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने भाग लिया। यह आयोजन धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक समर्पण का अनूठा उदाहरण बना।

कार्तिक पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने लगाई ताप्ती में श्रद्धा की डुबकी

विधायक ने की ताप्ती मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना, प्रसिद्ध गुरुद्वारा में मनाया गया प्रकाश पर्व

बैतूल/मुलताई। कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने ताप्ती तट मुलताई पहुंचकर ताप्ती सरोवर में श्रद्धा की डुबकी लगाई । मुलताई भाजपा विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ ताप्ती मंदिर पहुंचकर मां ताप्ती की पूजा अर्चना कर क्षेत्र में सुख और समृद्धि की कामना की इसके साथ ही नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गड़ेकर एवं विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने मेला ग्राउंड पहुंचकर रिबन काटकर ताप्ती मेले का शुभारंभ किया। ताप्ती के तट पर अनेक ग्रामों में एक दिवसिय ताप्ती मेले का आयोजन किया गया जिसमें निकटतम ग्राम सांडिया में ताप्ती तट पर लगे ताप्ती मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर ताप्ती तट पर पूजन पाठ कर भंडारा प्रसादी ग्रहण की ।यहां उल्लेखनीय की पवित्र नगरी सिख आस्था नगरी भी है कार्तिक पूर्णिमा मास पर नगर के प्रसिद्ध गुरुद्वारा साहब में गुरु नानक साहिब जी का प्रकाश पर्व हर्षोल्लास से मनाया जायेगा ।

नगर के प्रसिद्ध गुरुद्वारे में मनाया गया गुरु नानक देव का प्रकाश पर्व

सिखों के आस्था नगरी मुलताई के प्रसिद्ध गुरुद्वारा साहब में प्रकाश पर्व उल्लास के साथ मनाया गया ।एडवोकेट हरप्रीत कौर ने बताया कि गुरु नानक देव कार्तिक पूर्णिमा पर मुलताई आए हैं इसीलिए मुलताई गुरुद्वारा का अपना महत्व है कार्तिक पूर्णिमा को गुरु नानक साहिब जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य मे इस दिन विभिन्न धार्मिक आयोजन किए जाते हैं जिसमें बड़ी संख्या में लोग भाग लेते हैं बीते 5 दिनों से निकाली गई प्रभात फेरी का आज समापन हुआ इसके अलावा गुरुद्वारा साहिब मे प्रारम्भ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सहज पाठ की समाप्ति की गई। गुरुद्वारा साहिब जी मे स्थित निशान साहिब जी को भी संगत द्वारा मिलकर चोला चढ़ाया गया और कीर्तन, अरदास उपरांत दोपहर से गुरु का लंगर शुरू हुआ जो देव देर शाम तक जारी रहा ।

ताप्ती तट पर सुबह से ही लगी रही श्रद्धालुओं की भीड़

कार्तिक पूर्णिमा के दिन ताप्ती स्नान का अपना धार्मिक महत्व माना जाता है यही कारण है कि इस दिन अनेक जिलो और विशेष तौर पर महाराष्ट्र से बड़ी संख्या में श्रद्धालु ताप्ती तट पहुंचाते हैं । आज सुबह 6बजे से ही श्रद्धालु ताप्ती तक पहुंचने लगे थे और स्नान ध्यान कर ताप्ती दर्शन कर मान्यता अनुसार असीम पुण्य की प्राप्ति कर रहे थे बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए अनेक स्थानों पर भंडारा प्रसादी का आयोजन किया गया। बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं को देखते हुए नगर पालिका मुलताई द्वारा भी व्यापक इंतजाम किए गए थे जगह-जगह नगर पालिका के कर्मचारी तैनात किए गए थे महिलाओं के नहाने के लिए कनाथ लगाई गई थी, सुरक्षा की दृष्टि से ताप्ती सरोवर में रस्सी बांधी गई थी और सुरक्षा की दृष्टि से नाव की तैनाती की गई थी। हालांकि इस वर्ष पूर्व की तुलना में पुलिस प्रशासन की तैनाती कम दिखाई दी विशेषताओं से महिला पुलिसकर्मी की कमी दिखाई दी।

जिले में एकता व सद्भाव की मिसाल बन गया श्री गुरुनानकदेव जी का 555वां प्रकाश पर्व

- पाँच हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने लंगर प्रसादी का लाभ लिया
- विभिन्न स्पर्धाओं में बच्चों व बड़ों ने दिखाई प्रतिभा
- 2 दिन तक हुआ अखंड पाठ, जनप्रतिनिधि भी हुए शामिल

बैतूल। शहर में इस बार श्री गुरुनानक देव जी का 555 वां प्रकाश पर्व पूर्ण हर्षोल्लास से सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शबद कीर्तन, कविता पाठ, अखंड पाठ, नगर कीर्तन यात्रा व लगातार दस दिनों तक ब्रह्म मुहूर्त में प्रभातफेरी निकालकर कई सेवा कार्य करते हुए मनाया गया। जिसमें अन्य वर्षो की अपेक्षा इस बार चार गुना अधिक श्रद्धालु पहुंचे। सर्वप्रथम 11 नवंबर सोमवार को निकाले गए नगर कीर्तन में आगरा से आए चार साहिबजादे इंटरनेशनल गतका दल के हैरतअंगेज करतब आकर्षण का केंद्र रहे। पंज प्यारे की अगुआई में निकले नगर कीर्तन का शहर के प्रमुख मार्गों में पुष्प वर्षा, शीतल शरबत व मिठाई वितरण कर शहर के कई व्यापारियों व सामाजिक संस्थाओं ने भव्य स्वागत किया वहीं दूसरे दिन मंगलवार को श्री गुरुनानक जयंती पर गुरुद्वारे में कई कार्यक्रम आयोजित हुए प्रातः11 बजे से शबद कीर्तन व दोपहर एक बजे से विशाल लंगर का आयोजन किया गया जिसमे लगभग पाँच हजार से अधिक लोगों ने प्रसादी ग्रहण की। दिन भर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। दस दिनों तक लगातार ब्रह्मवेला में प्रभातफेरी भी निकाली गई। बैतूल के गुरु घर के वजीर भाई अरविंदर सिंघ जी की अमृतवाणी और उनके रागी जत्थे ने गुरुद्वारे और नगर कीर्तन यात्रा में सुमधुर शबद कीर्तन की प्रस्तुति देकर संगत को मंत्रमुग्ध कर दिया। कई अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों व पत्रकारों ने भी गुरुद्वारे पहुँचकर मत्था टेका व लंगर छका। जिसमें भाजपा विधायक हेमंत खंडेलवाल, श्रीमती रितु खंडेलवाल, नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, पूर्व विधायक निलय डागा, दीपाली डागा, मुकेश खंडेलवाल, प्रदीप खंडेलवाल, पूर्व विधायक शिवप्रसाद राठौर, पार्षद विकास प्रधान सहित कई पत्रकार, गणमान्य नागरिक और हजारों श्रद्धालु शामिल थे। शाम 7-30 बजे से 9 बजे तक पुनः दीवान सजा उपरांत गुरु का लंगर आयोजित हुआ। लंगर प्रसादी बनाने और वितरण की सेवा में सिख सेवादारों ने पूरी तत्परता व लगन से सेवा की जिम्मेदारी निभाई कार्यक्रम के समापन पर उन सभी का प्रधान द्वारा सरोपा भेंट कर सम्मान किया गया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों शबद गायन प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को प्रमाण पत्र व अन्य पुरुस्कार भी वितरित किये गए। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष सोनू बग्गा द्वारा किया गया व गुरुद्वारा श्री गुरुसिंघ सभा के अध्यक्ष सरबजीत सिंह आहलूवालिया सहित श्री गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एवं समूह नाम लेवा संगत ने आयोजन को तन-मन-धन से सफल बनाने वाले सभी सेवादारों के अलावा आयोजन में बड़ी संख्या में शामिल हुई सभी संगत का आभार व्यक्त किया।

ग्राम सोमगढ़ में हुआ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व बिरसा मुंडा प्रतिमा का अनावरण

पूर्व मंत्री सुखदेव पांसे ने किया प्रतिमाओं का अनावरण

बैतूल/मुलताई। मुलताई के प्रभातपट्टन ब्लाक के ग्राम पंचायत सोमगढ़ में डॉ बाबासाहेब आंबेडकर एवं बिरसा मुंडा की प्रतिमा का अनावरण म.प्र. कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष एवं पूर्व केबीनेट मंत्री सुखदेव पांसे द्वारा किया गया । इस अवसर पर ग्राम में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए सुखदेव पांसे ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संविधान के शिल्पकार बाबा साहेब अंबेडकर ने अपने जीवन में संघर्ष के कर शोषित पीड़ित लोगों के उत्थान के लिए जो प्रयास किये थे उसके हम सब उनके ऋणी रहेंगे। डॉ. अंबेडकर के विचार आज भी प्रासंगिक है तथा बिरसा मुंडा एक भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे उन्होंने ब्रिटिश शासन के बढ़ते जुल्म के खिलाफ कम उम्र में ही अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया, उनका प्रभाव इतना था कि अंग्रेज सरकार ने उनकी गिरफतारी के लिए इनाम की घोषणा कर दी थी। वे दुनिया के ऐसे पहले लोक नायक थे, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के साथ साथ समाज सुधार की बात की। इस अवसर पर कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य सरस्वती नागले, कमल पीपरदे, नामदेव हरसुले, संतू सूर्यवंशी, दौलत बिहारे, मनीराम टेलर, रमेश भलावी, सुंदर कुमरे, सुखदेव कंगाली, नरेन्द्र बेले, संजू नागले, सुनिल भलावी सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने एकलव्य मॉडल रेसिडेंशियल स्कूल, भीमपुर का किया वर्चुअल लोकार्पण

बैतूल। धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय समारोह पीएम श्री जयंती हॉक्सर महाविद्यालय बैतूल में आयोजित किया गया। जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में बिहार के जुमई में आयोजित मुख्य समारोह का सीधा प्रसारण किया गया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने समारोह में 6600 करोड़ से अधिक की योजनाओं का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा वर्चुअली बैतूल जिले के एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल ब्लॉक भीमपुर का भी लोकार्पण किया गया।

जिला स्तरीय कार्यक्रम में विधायक बैतूल श्री हेमंत खंडेलवाल, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री हंसराज धुर्वे तथा कलेक्टर बैतूल श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, सीईओ जिला पंचायत श्री अक्षत जैन, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य श्रीमती शिल्पा जैन सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में जनजातीय समुदाय उपस्थित रहा। जनजातीय समुदाय ने कार्यक्रम में उत्साह पूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कृष्णा हजारे एवं आभार प्रदर्शन श्री तिवारी ने किया। जिला स्तरीय समारोह में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भगवान बिरसा मुंडा के शौर्य पराक्रम और गौरव पर केंद्रित आकर्षक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में असाडी दल द्वारा पारंपरिक वेशभूषा में बांसुरी वादन और ढोलक की थाप पर प्रस्तुत आकर्षक नृत्य ने दर्शकों का मन मोहा। क्रीड़ा परिसर बैतूल के विद्यार्थियों ने श्रीमती कविता जोंधलेकर के निर्देशन में 'आदिवासी पूजने वाला' गीत पर मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति दी। कंचन वट्टी एवं रंजना वट्टी के निर्देशन में भगवान बिरसा मुंडा के शौर्य पराक्रम पर आधारित नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई। आदिवासी उत्कृष्ट छात्रावास की बालिकाओं ने श्रीमती ज्योति विजयकर के निर्देशन में नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में विधायक श्री खंडेलवाल सांस्कृतिक कार्यक्रमों के सभी चारों प्रतिभागी दलों को प्रोत्साहन स्वरूप 5-5 हजार की राशि देने की घोषणा की।

हितग्राहियों को हितलाभ वितरित- समारोह में अतिथियों द्वारा विभिन्न योजनाओं के तहत हितग्राहियों को हित लाभ वितरित किया गया। बैतूल के श्री रवि पखारे को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत 50000 की ऋण राशि का चेक वितरित किया गया। श्रीमती लता मर्सकोले को आयुष्मान कार्ड वितरित किया गया। इसी प्रकार श्रीमती कविता परते को प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत हितलाभ प्रमाण पत्र, ग्राम झगड़िया के फुले सिंह धुर्वे और रतन इवने को सरसों बीज बैग और ग्राम खापा की साधना इवने को सॉइल हेल्थ कार्ड का वितरण किया गया।

साहित्य

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

कविता में मन को स्वस्थ रखने की जादुई ताकत

लोग सालों साल प्रतीक्षा करते थे कि फलां कवि सम्मेलन में फलां कवि आयेंगे और उस कवि को सुनने के लिए चलेंगे। मेले में सबसे ज्यादा भीड़ कवि सम्मेलन के दिन होती थी और हर मेले में एक न एक कवि सम्मेलन जरूर होता था जो कविता की शक्ति को बताने के लिए काफी होता है। बाजार, मेले और लोगों के जीवन में कविता थी और जब कविता थी तो एक खुशी और चमक भी थी। कवि से बात करना कवि की कविता सुनना सब एक अलग दुनिया में ले जाते के लिए काफी होता था। हर कवि सम्मेलन और उसकी उपलब्धियां बहुत दिनों तक लोगों के मन मस्तिष्क में बनी रहती थी।

कवि से कविता सुनने का अलग ही अनुभव होता है जब कवि साक्षात जादुई शब्दों को अपने भाव व आवर्तन में प्रस्तुत करता है तो न केवल शब्द समझ में आने शुरु होते हैं बल्कि शब्द के पीछे क्या कुछ कहा गया है वह भी समझ में आ जाता है। जिस किसी ने महाप्राण निराला को कविता पढ़ते हुए सुना है या नीरज को कविता पढ़ते सुना है या अज्ञेय को कविता पढ़ते सुनना देखना एक विशिष्ट अनुभव हो जाता था। कवि को सुनने के लिए बहुत दूर तक लोग चलें जाते थे। अपने मनपसंद कवि को सुनना और आनंद के हिलोरें में डूबना एक पीढ़ी का प्रिय शगल होता था। लोग सालों साल प्रतीक्षा करते थे कि फलां कवि सम्मेलन में फलां कवि आयेंगे और उस कवि को सुनने के लिए चलेंगे। मेले में सबसे ज्यादा भीड़ कवि सम्मेलन के दिन होती थी और हर मेले में एक न एक कवि सम्मेलन जरूर होता था जो कविता की शक्ति को बताने के लिए काफी होता है। बाजार, मेले और लोगों के जीवन में कविता थी और जब कविता थी तो एक खुशी और चमक भी थी। कवि से बात करना कवि की कविता सुनना सब एक अलग दुनिया में ले जाते के लिए काफी होता था। हर कवि सम्मेलन और उसकी उपलब्धियां बहुत दिनों तक लोगों के मन मस्तिष्क में बनी रहती थी।

यह बात दीगर है कि एक समय के बाद कवि सम्मेलन भी कविता से दूर चलें गये और बहुधा गंभीर किस्म के लोग कवि मंचों से न केवल दूरी बनाने लगे बल्कि इन लोगों के लिए कविता केवल गंभीर विमर्श से जोड़ने का माध्यम होती गई जिसका परिणाम यह रहा कि कवि सम्मेलन से एक दूरी बनती गई। पर अच्छी कविता जहां हो वहीं पर आदमी का मन लग जाता है। कवि के यहां शब्दों का एक अलग ही संसार होता है। उसी शब्द को आम आदमी दिन भर काम में लेता है पर जब वह शब्द किसी कविता के भीतर एक निश्चित क्रम में आता है तो उसके कहने की ताकत कई गुना बढ़ जाती है। एक बार कविता कवि के मुख से सुनिए फिर देखिए की कविता का किस तरह से प्रभाव होता है। हमारे यहां कवि और कविता तथा कवि सम्मेलन को उस गंभीरता से लिया नहीं गया जिस तरह से लेना चाहिए। यदि कवि की कविता को उसी तरह लिया जाता है जिस तरह से से कवि लेता है तो कविता में प्राण आ जाता। यहीं कविता की शक्ति हो जाती है। मैं स्वयं कविता को और कहानी को जादुई शक्ति का मानता हूं और यह महसूस करता हूं कि कविता सुनाकर लोगों का दुःख दूर किया जा सकता है और जादुई तरीके से इसी बिंदु पर खुशी का जरिया मिल जाता है। निश्चित ही कविता और कहानी सुनाने की सही ढ़ंग से कला हो तो आदमी के भीतर प्राण फूंका जा सकता है। कविता में जादुई ताकत होती है। कवि और कविता राजा को जब युद्ध के मैदान में ले जा सकते थे तो बीमार के भीतर हंसी के झरने भी फोड़ सकते हैं। हम सभी ने ऐसे दृश्य बहुत करीब से देखा है कि पहले लोग जब बीमार पड़ते थे तो लोगों को मिलने के लिए बुलाते थे और उसमें से कोई न कोई जादुई आदमी ऐसा होता था जिससे बतियाकर दादा दादी नाना नानी जैसे बड़े बुजुर्ग ठीक हो जाते थे। ये लोग अपने आसपास एक हंसोड़ टाइप आदमी भी रखते थे जो इन लोगों का मानसिक इलाज करता रहता था। अब आज

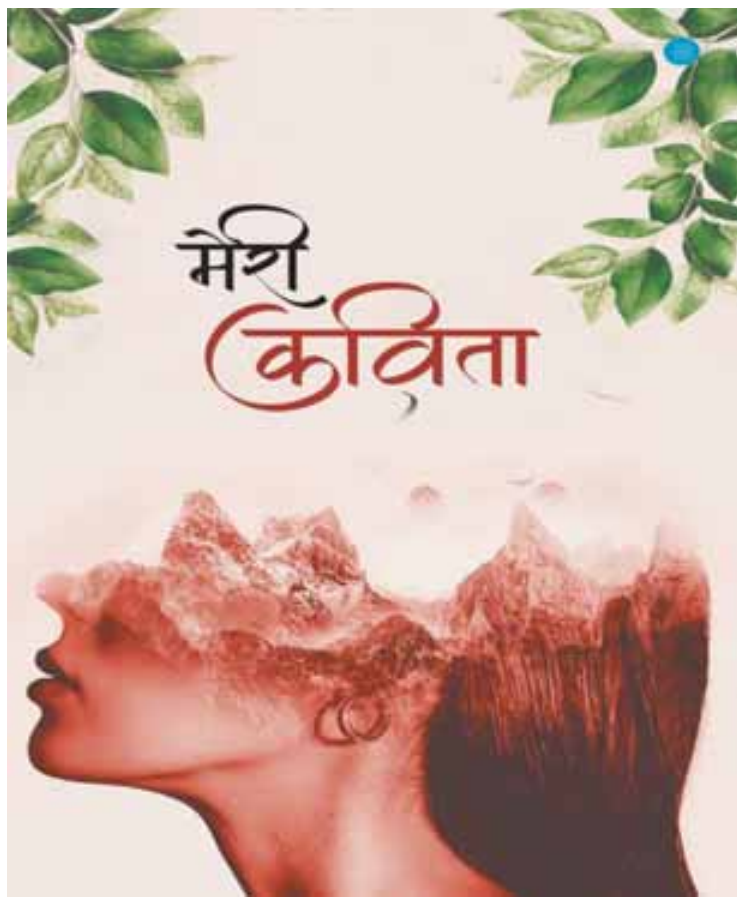

लोग इतने कंजूस अर्थ और विचार दोनों से हो गये हैं कि...किसी को अपने आसपास आने ही नहीं देते कि चाय पानी, खर्चा बर्चा उठाना पड़ेगा। कविता की फार्मेसी महंगा इलाज है जब यह बात लंदन में कहीं जा रही है तो सही है कि ठीक संदर्भ से कहीं जा रही है। हमारे यहां भी हर गांव मुहल्ले में ऐसे कवि लेखक होते रहे हैं जिन्हें सुनकर अच्छे अच्छे ठीक हो जाते थे। ऐसे में कविता फार्मेसी जैसी बात भी सामने आ रही है तो कोई आश्चर्य नहीं है इस तरह की पहल और हिम्मत करनी चाहिए। अब कवियों को निश्चित तौर पर दुकान खोल कर बैठ जाना चाहिए। भले मरीज दिन में एक न आवे पर पंद्रह और पच्चीस दिन में भी आ जाएं तो हल हो जायेगा और घाटे का सौदा नहीं होगा।

गांव में जब हम लोग बीमार होते थे और जब मन नहीं लगता था तो हम लोगों के पड़ोस में एक मां जैसी मां थी और उनसे बड़ी अच्छी अच्छी कहानी सुनते थे। उन कहानियों में यथार्थ और आदर्श का मिला-जुला रूप होता था। इन स्थितियों को हम इतना सच मान लेते थे कि कहानी जैसे हमारे उपर घट रही हों कहानी और कविता सुनते सुनते आंखों से आंसू भी झरने लगते तो आनंद में मग्न हो जाते थे। कविता कहानी सुनते सुनते सच मानिए कब आधी रात निकल जाती थी और कब हम लोग नींद में आ जाते थे किसी को पता भी नहीं चलता था और उस कहानी पर दो चार दिन विचार मनन करते रहते थे। बचपन में मन न लगने पर कहानियां सुनता था और कागज़ों पर कविता लिखता था। जब कविता फार्मेसी वाली न्यूज पढ़ने को मिली तो आश्चर्यजनक रूप से खुशी हुई कि अब जल्द ही कविता के विवेक से मानव मन के विरेचन की दुकान खोली जा सकती है। कविता के स्टाल पर कुछ और हो या न हो पर यह तो तय है कि यहां आपको सुकून के साथ रहने और रचने का स्पेस मिलेगा। कविता के स्टाल पर चाय पीते हुए कवि कविता सुनायेंगे और सभी को अपना स्वास्थ्य, सम्मान और उपचार भी मिलेगा। कवि और कविता मनुष्य को सामाजिक बनाने का काम करती हैं, इतना ही नहीं संसार के यथार्थ से जुड़ने और जूझने की ताकत कविता के द्वारा ही मिलता है।

अस्तु! कविता उपचार के लिए मनुष्य की सबसे आनंद दायक उपलब्धि हो सकती है। कविता के पास जायें और अपना उपचार खोजें कुछ न कुछ हासिल होगा। कविता जीवन में बीज मंत्र की तरह होती है। यह हो सकता है कि आप कवि ने हों पर आप कविता के प्रभाव से बच नहीं सकते। कविता संवेदनशील बनाती है, जीवन से बहुत गहरे जोड़ती है और इस तरह एक जिम्मेदार नागरिक धर्म निभाने के लिए कहती है। कवि हमें जिस तरह मनुष्यता से जोड़ने का काम करती है वहीं कविता को मनुष्य के स्वास्थ्य का अधिकारी बनाती है।

सकल पंच फूल माली समाज का अन्नकूट महोत्सव.....

नगर में निकली भगवान श्रीराम की शोभायात्रा, हजारों की संख्या में शामिल हुए समाजजन

भगवान श्रीराम को लगाया छप्पन भोग, अनेक मंचों से सामाजिक संस्थाओं ने किया स्वागत

धार। श्री सकल पंच फूलमाली समाज धार द्वारा अन्नकूट महोत्सव का आयोजन 15 नवंबर को किया गया। महोत्सव के तहत पौ चौपाटी स्थित भगवान श्रीराम मंदिर से भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में सबसे आगे डीजे की धून पर भगवान के भक्ति गीत बज रहे थे। इसके पीछे बैंड पर सुमधुर भजन बज रहे थे। शोभायात्रा में भगवान श्रीराम की आकर्षक झांकी भी शामिल थी। वहीं एक सुसज्जित बग्घी पर भगवान श्रीराम, जानकी व भक्त हनुमान का तेल चित्र रखा गया था। चल समारोह में समाज अध्यक्ष मोतीलाल रत्नागर भूतपूर्व फौजी, नवयुवक मंडल अध्यक्ष रवि मौर्य, महिला मंडल अध्यक्ष ऋतु देवड़ा, रामायण मंडल अध्यक्ष छोटेलाल देवड़ा सहित समाज के पंच व अन्य वरिष्ठ समाजजन शामिल हुए। इसी के साथ बड़ी संख्या में मातृशक्ति व युवाओं ने भी चल समारोह में शामिल होकर समाज की एकता को प्रदर्शित किया।

यहां से निकली शोभायात्रा...

शोभायात्रा पौ चौपाटी राम मंदिर से प्रारंभ होकर नालछा दरवाजा, पट्ठा चौपाटी, धानमंडी, आनंद चौपाटी, राजबाड़ा होते हुए समाज के राम मंदिर पर पहुंची। चल समारोह का नगर में अनेक सामाजिक संस्थाओं व अन्य समाजजनों ने मंच लगाकर स्वागत किया। भगवान को लगाया छप्पन भोग, बच्चों को किए पुरस्कार वितरित। इस वर्ष अन्नकूट महोत्सव के तहत दगड़ीबाई स्वर्गीय बाबूलाल जांगड़े की और से भगवान को पोषाख व छप्पन भोग लगाया। शोभायात्रा के राम मंदिर पर पहुंचने के बाद महाआरती की गई व समाजजनों को प्रसादी का वितरण किया गया।

बांटे पुरस्कार, प्रतिभावान विद्यार्थियों का किया सम्मान....

मीडिया प्रभारी ताराचंद पटेल ने बताया कि अन्नकूट महोत्सव के तहत नवयुवक मंडल व महिला मंडल द्वारा अन्नकूट महोत्सव के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराए गए। जिसमें निबंध, रंगोली, फैंसी ड्रेस , प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। स्पर्धा में भाग लेने वाले समाज के बच्चों को अन्नकूट महोत्सव के दौरान प्रोत्साहित किया गया। बच्चों को पुरस्कार समाज के भवानी माता बाग गार्डन में में वितरित किए गए। समाज अध्यक्ष श्री रत्नागर, समाज के माणक पटेल, नवयुवक मंडल अध्यक्ष रवि मौर्य, महिला मंडल अध्यक्ष ऋतु देवड़ा, रामेश्वर मौर्य, दुलीचंद बानीवाल, हीरा मौर्य सहित अन्य पंचगण मंचासीन थे।

वरिष्ठों का किया सम्मान...

अन्नकूट महोत्सव कार्यक्रम के दौरान सकल पंच द्वारा समाज के वरिष्ठों का सम्मान समारोह भी किया गया। वहीं भगवान को छप्पन भोग व पोषाख अर्पित करने पर श्रीमती दगड़ीबाई जांगड़े का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान समाज के कक्षा 10वीं व 12 वीं में उच्च अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभावान विद्यार्थियों को शील्ड व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन दुलीचंद बानीवाल ने किया। स्वागत उद्बोधन समाज के अनिल गेहलोत ने दिया। कार्यक्रम के दौरान हरित कुंभ थाली झुला के लिए कुंभ का घड़ा भी समक्ष रखा गया। इसकी जानकारी गोपाल डोड ने दी। नवयुवक मंडल के सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन गोकुल परमार ने किया। कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में समाज के पदाधिकारी व समाजजन व महिलाएं मौजूद थी।

जनजातीय गौरव दिवस से हमारी आजादी में जनजातीय नायक-नायिकाओं के योगदान से देश-दुनिया को परिचित कराने में मदद मिली है: राज्यपाल मंगुभाई पटेल

आज का दिन किसी त्यौहार से कम नहीं है : मुख्यमंत्री

धार से राजेश शर्मा.....

राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में धार में भगवान बिरसा मुण्डा जयंती के अवसर पर राज्य स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस समारोह आयोजित किया गया।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने देश के महान सपूत, क्रांतिकारी, जनजातीय अस्मिता, स्वायत्तता और संस्कृति के प्रतीक बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती पर उन्हें नमन करते हुए जनजाति गौरव दिवस की शुभकामनाएं और बधाई दी। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व और कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाने के लिये किये जा रहे प्रयासों के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों से प्रारंभ हुए जनजातीय गौरव दिवस के माध्यम से हमारी आजादी में जनजातीय नायक-नायिकाओं के योगदान से देश-दुनिया को परिचित कराने में मदद मिली है। अंग्रेजों से वीरता पूर्वक युद्ध करने वाले, जन-समुदाय द्वारा भगवान के रूप में पूजे जाने वाले, मुण्डा क्रांति के जनक बिरसा मुण्डा थे। उन्होंने सशस्त्र छापामार संघर्ष में बलिदानी रायत्रा, संथाल विद्रोह या हूल आंदोलन में तीर-कमान के साथ शामिल होने वाले शहीद सिद्धो संथाल, कान्हू संथाल, उनके छोटे भाई चाँद और भैरव के योगदान का भी उल्लेख किया। श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की संवेदनाएं जनजाति

वर्ग के प्रति विशेष रूप से है। जनजातीय वर्ग के कल्याण के लिये उन्होंने बजट में पाँच गुना से अधिक की वृद्धि की है। ऐसे प्रधानमंत्री बिरले ही होते हैं। पीएम जन मन योजना के माध्यम से जनजातीय वर्ग के कल्याण को नई दिशा दी जा रही है। बेगा, सहरिया सहित अन्य पिछड़े जनजातीय वर्ग के जीवन में सुधार के लिये भी विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने वर्ष 2047 तक देश को सिकल सेल जैसी घातक बीमारी से समाज को मुक्त कराने का लक्ष्य रखा है। इस प्रयास में समाज के हर वर्ग को आगे आना होगा। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वे इस बीमारी के उन्मूलन के संबंध में जागरूकता के लिये विशेष प्रयास करें।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आज का दिन किसी त्यौहार से कम नहीं है। आज के दिन हमारे समाज के गौरव बिरसा मुण्डा ने जन्म लिया था। यह दिन हमारे लिये गौरव के साथ-साथ गर्व का दिन भी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस दिन को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की है। बिरसा मुण्डा ने जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिये संघर्ष किया। उन्होंने भारत माँ की रक्षा के लिये भी अपनी जीवटता और वीरता से अनेक उल्लेखनीय कार्य किये और समाज को नई दिशा दी। धर्मांतरण के विरोध में आवाज उठाते हुए वे आगे आये। श्री यादव ने कहा कि संस्कृति बचेगी तो हम बचेंगे। संस्कृति की रक्षा के लिये बिरसा मुण्डा का भारत के इतिहास में एक बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि टंट्या मामा के नाम से विश्वविद्यालय बनाया गया है। रेलवे स्टेशन का नाम भी टंट्या मामा के नाम पर किया गया है। हमारी सरकार जनजाति समाज के समग्र कल्याण के लिये कृत संकल्पित होकर लगातार काम कर रही हैं, जो अनवरत जारी रहेंगे। उन्होंने कहा जल संवर्धन के माध्यम से विकास को नये आयाम दिये जा रहे हैं। धार जिले में 334 करोड़ रूपये लागत के 57 विकास कार्यों की सौगात क्षेत्र को प्रगति के पथ पर तेज गति प्रदान करेगी। इससे क्षेत्र में विकास के साथ-साथ रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। मध्यप्रदेश के राजभवन में पहली बार जनजाति प्रकोष्ठ बनाया गया है जो कि जनजातीय समाज के विकास के लिये एक सराहनीय प्रयास है।

केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि बिरसा मुण्डा हम सभी के लिये प्रेरणा के स्त्रोत हैं। प्रधानमंत्री के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूं कि उन्होंने जनजाति समाज के नायक बिरसा मुण्डा के योगदान को जन-जन तक पहुंचाने के लिये जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की।

प्रदेश के जनजातीय कल्याण मंत्री विजय शाह ने कहा कि जनजाति गौरव दिवस का आयोजन ऐतिहासिक आयोजन है।

यह भी थे उपस्थित- कार्यक्रम में पूर्व केन्द्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, सांसद सुमेर सिंह सोलंकी, विधायक नीना वर्मा, उषा ठाकुर तथा कालूसिंह ठाकुर, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेढ़ा, पूर्व मंत्री श्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव तथा श्रीमती रंजना बघेल, पूर्व सांसद श्री छतरसिंह दरबार, नगर पालिका अध्यक्ष नेहा बोड़ाने, जिला भाजपा अध्यक्ष मनोज सोमानी, पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया, जयदीप पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

334 करोड़ रुपए से अधिक लागत के विकास कार्यों की सौगातें.....

राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने धार जिले के लिये 334 करोड़ रुपए से अधिक लागत के विकास कार्यों की सौगातें दी। इसमें से 217.66 करोड़ रुपए लागत के 33 कार्यों का लोकार्पण तथा 116.70 करोड़ रुपए लागत के 24 कार्यों का भूमि पूजन किया गया। धार, धरमपुरी विधानसभा क्षेत्र के विजन डाक्यूमेंट-2047 और सिकलसेल उन्मूलन के संबंध में जारी विशेष डाक टिकट का विमोचन भी किया गया। वन अधिकार अधिनियम के संबंध में तैयार एफआरए एटलस का शुभारंभ भी किया गया।

भीली भाषा में अनुवादित रामायण की अनमोल कृति अतिथियों को भेंट...

मुख्य अतिथि मंगुभाई पटेल और डॉ. मोहन यादव ने जनजातीय वर्ग द्वारा उत्पादित सामग्री की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने विक्रेताओं एवं उत्पादकों से चर्चा भी की। कार्यक्रम में विभिन्न योजनाओं के तहत हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण भी किया गया। अतिथियों का स्वागत पारम्परिक रूप से पगड़ी एवं बंडी पहनाकर किया गया। साथ ही सम्मान स्वरूप उन्हें जनजाति प्रतीकों तीर कमान आदि भी भेंट किये गये। अतिथियों को भानू शंकर गहलोद द्वारा भीली भाषा में अनुवादित रामायण की अनमोल कृति भी भेंट की गई।

इन्हें मिला जनजातीय गौरव सम्मान....

राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने समारोह में समाज सेवा, चिकित्सा, कला आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले जनजाति समाज के व्यक्तियों को जनजातीय गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। इनमें अंगदान करने वाले दानदाता के माता पिता धन सिंह एवं सुन्दरी बाई, सरदारपुर के फुटबॉल प्रशिक्षक शैलेन्द्र, ड्रोन इंजन बनाने वाले प्रीतम जामोद की माता देवकी जामोद, बाग की सैकड़ीबाई, अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. भारत सिंह निनामा शामिल हैं। राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल में जनजातीय नायकों के योगदान पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। उन्होंने कार्यक्रम में दिव्यांगजनों को बैटरी चालित ट्राई साइकिल भी प्रदान की।

सेमरीहरचंद अभाविप ने किया आयोजन

बिरसा मुंडा जयंती पर आदिवासी ग्राम कामती रंगपुर में जनजाति गौरव दिवस पर सांस्कृतिक कला महोत्सव

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

सेमरी हरचंद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के तत्वावधान में बिरसा मुंडा जयंती के अवसर पर समीपवर्ती आदिवासी ग्राम कामती रंगपुर में जनजाति गौरव दिवस पर जनजाति सांस्कृतिक कला महोत्सव का कार्यक्रम में कृषि उपज मंडी इन्स्पेक्टर चंदशिवराम उइके ,अजाक्स जिला अध्यक्ष शाला प्राचार्य लक्ष्मी काकोड़िया ,जिला संयोजक मृदुल नाथ चौहान आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ। अतिथियों ने बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण दीप प्रज्जलन करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि चंदशिवराज उइके ने कार्यक्रम को संबोधित करते कहा कि आदिवासी के आदर्श रहे बिरसा मुंडाजी ने समाज को एकात्मक सूत्र में बांध रखा था।धर्मांतरण, लगान, जैसी अंग्रेजी तानाशाही रवैया के खिलाफ अपना मोर्चा खोल समाज का उत्थान किया है। इसी कारण बिरसा मुंडा की जयंती पर जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। वर्तमान में आदिवासी समाज को भी उनके बताए मार्ग पर चलकर अपने अधिकारों हक के लिए लड़ना चाहिए। हमें समाज को शिक्षित संस्कारित बनाने में अपनी अहम भूमिका चाहिए। वहीं विसंगतियों ,कुरुनीतियों से ऊपर उठकर समाज उत्थान ,देश, भारत माता के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। बिरसा मुंडा के बलिदान प्रेरणा एवं विचारों पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इसी अवसर पर वनांचल में रहने वाले आदिवासी जनजाति के विघार्थियों आदिवासियों महिलाओं एवं नागरिकों समाजिक , कलात्मक ,रचनात्मक संस्कृति को प्रस्तुत करते हुए कला महोत्सव में बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाकर समाज की परंपराएं रीति नीति का वर्णन कला के माध्यम से किया। कार्यक्रम की उल्लेखनीय बात यह रही कि विद्यार्थियों ने वेशभूषा ,गीत, आर्कषण का केंद्र रहे।

भोपाल में पली बढ़ी हैं 71 वर्षीय तैराक, स्वप्ना प्रकाश वाणी

हाल ही में 10 नवंबर से 12 नवंबर 2024 के बीच संपन्न 20वी मास्टर्स राष्ट्रीय स्विमिंग चैंपियनशिप 2024 में महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली श्रीमती स्वप्ना प्रकाश वाणी ने व्यक्तिगत बैक स्ट्रोक, बटरफ्लाई, फ्री स्टाईल, इंडिव्हिज्युअल मिडले, इंडिविज्युअल मिडले रिले स्विमिंग स्पर्धाओं में एक स्वर्ण पदक, तीन रजत पदक एवं एक कांस्य पदक जीता है।

श्रीमती स्वप्ना प्रकाश वाणी भोपाल में पली बढ़ी है। उनकी उम्र 71 वर्ष है। उनकी शिक्षा मारवाड़ी रोड स्थित शासकीय विक्टोरिया माध्यमिक शाला, हमीदिया गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल ,कमला नेहरू हायर सेकेंडरी स्कूल एवं महारानी लक्ष्मीबाई कॉलेज भोपाल में हुई है। उनके पिता स्वर्गीय श्री जी एम वाणी भोपाल जिला सहकारी केंद्रीय बैंक में प्रबंध संचालक थे। विवाहोपरांत वे महाराष्ट्र गई। उनके पति स्वर्गीय श्री प्रकाश जगन्नाथ वाणी महाराष्ट्र

शासन में अतिरिक्त आयुक्त एवं मुंबई यूनिवर्सिटी में कंट्रोलर आफ एग्जामिनेशन थे। अपने जीवनकाल में तैराकी सीखने का उनका एक बहुत ही रोचक प्रसंग है।वे अपने बेटे को तैराकी सीखाने रोज स्विमिंग पूल ले जाती थी और लगभग दो घंटे का समय वहां पर बिताना पड़ता था। इन दो घंटो का सदुपयोग किया जाए, इस भावना से उन्होंने भी तैराकी सीखना प्रारंभ की। उस समय उनकी उम्र 40 वर्ष थी। बीतते समय के साथ उन्होंने तैराकी में विशेषज्ञता प्राप्त की। विभिन्न राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय तैराकी प्रतियोगिताओं में उन्होंने अभी तक 84 स्वर्ण पदक ,51 रजत पदक एवं 23 कांस्य पदक, इस प्रकार कुल 158 पदक जीते हैं। सात सागर जलतरण स्पर्धा एवं नौकानयन स्पर्धा में भी भाग लेकर जीत हासिल की है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उन्होंने रूस में कजानका नदी में आयोजित स्विमिंग कंपटीशन में भी भाग लिया था। तैराकी मे अपनी विशेषज्ञता को अपने तक सीमित न रखते हुए उन्होंने अभी तक 2000 से अधिक महिलाओं एवं बच्चों को तैराकी में प्रशिक्षित किया है। उन्हें समाचार पत्रों एवं प्रतिष्ठित सामाजिक संस्थाओं द्वारा 'जलपरी' के विशेषण से संबोधित किया है एवं 'राजमाता जिजाऊ जीवन गौरव' पुरस्कार से भी सम्मानित किया है।

अफ्रीका के सबसे ऊंचे पहाड़ पर खिलेगी एमपी की मुस्कान

केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की मदद से पूरी करेंगी यात्रा

भोपाल। मध्य प्रदेश के अशोकनगर की मुस्कान रघुवंशी अफ्रीका के सबसे ऊंचे पर्वत माउंट किलिमंजारो पर चढ़ाई करने जा रही हैं। यह चुनौतीपूर्ण अभियान 23 नवंबर से शुरू होगा और 10 दिन तक चलेगा। इससे पहले मुस्कान ऑस्ट्रेलिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट कोसियुस्को पर भी चढ़ाई कर चुकी हैं। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मुस्कान के सपनों को पंख दिए हैं और उनकी इस यात्रा में मदद कर रहे हैं। मुस्कान रघुवंशी मध्यप्रदेश के अशोकनगर जिले के महाना गांव की रहने वाली हैं। 22 साल की मुस्कान एक साइकिलिस्ट और पर्वतारोही हैं। उन्होंने कई राष्ट्रीय पुरस्कार भी जीते हैं। मुस्कान का सपना दुनिया के सातों महाद्वीपों की यात्रा करना है। वे

2800 मीटर ऊंची चोटी को फतह कर चुकी हैं। अब उनका लक्ष्य 5895 मीटर (19,340 फीट) ऊंचे माउंट किलिमंजारो पर चढ़ाई करना है। मुस्कान की इस असाधारण यात्रा की शुरुआत 19 नवंबर को होगी। इस दिन जिला कलेक्टर कार्यालय से समाजसेवी और वरिष्ठ अधिकारी उन्हें विदाई देंगे। मुस्कान ने बताया कि मैंने 19 दिनों में 3200 किलोमीटर की नर्मदा परिक्रमा साइकिल से पूरी की। फिर साइकिल से ही मैंने 25 दिन में 3500 किलोमीटर की यात्रा करके कश्मीर से कन्याकुमारी तक का सफ़र तय किया। उन्होंने बताया कि केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की मदद से ही वे ऑस्ट्रेलिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट कोसियुस्को पर चढ़ाई कर पाईं। इसके लिए वे केंद्रीय मंत्री सिंधिया की आभारी हैं। इस उपलब्धि के लिए उन्हें हाई रेंज बुक ऑफ वर्ल्ड खिताब से भी नवाजा गया।

हाथियों की मौत पर अब एनजीटी ने लिया संज्ञान

अधिकारियों को जारी किया नोटिस, सात दिन में मांगा जवाब

भोपाल। मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में हाथियों की रहस्यमय मौत के मामले में एनजीटी ने खुद संज्ञान लिया है। एनजीटी ने इस मामले में कई अधिकारियों को नोटिस जारी किए हैं। इनमें प्रधान मुख्य वन संरक्षक (मध्य प्रदेश), मुख्य वन्यजीव व वार्डन (एमपी), कलेक्टर (उमरिया), भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) के निदेशक, भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई) के निदेशक और केंद्रीय कृषि मंत्रालय के सचिव शामिल हैं। वहीं, एनजीटी ने सभी को एक हफ्ते के अंदर, अगली सुनवाई से पहले, जवाब दाखिल करने को कहा है। यह मामला शुरुआत में एनजीटी की प्रधान पीठ के सामने आया था, जिसे बाद में केंद्रीय पीठ को स्थानांतरित कर दिया गया। एनजीटी के आदेश में उन रिपोर्टों का हवाला दिया गया है जो बांधवगढ़ में 10 हाथियों की मौत को दूषित कोदो बाजरा खाने से जोड़ती हैं। शुरुआती जांच से पता चलता है कि मौतें बाजरा में मायकोटॉक्सिन संदूषण के कारण हुई हो सकती हैं। प्रभावित क्षेत्र से नमूने आगे के विश्लेषण के लिए दो प्रयोगशालाओं में

भेजे गए थे, उत्तर प्रदेश में भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान और मध्य प्रदेश के सागर में एक फोरेंसिक लैब। एनजीटी के आदेश में आगे कहा गया है कि कोदो बाजरा, जो भारत के कई हिस्सों में मुख्य भोजन है, अपने उच्च फाइबर और खनिज सामग्री के लिए जाना जाता है। हालांकि, जब यह मायकोटॉक्सिन से संक्रमित हो जाता है। खासकर मानसून के मौसम में नमी की स्थिति में तो इसमें फंगल संक्रमण हो सकता है। यह संदूषण मनुष्यों और जानवरों दोनों के लिए गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकता है। इससे लीवर और किडनी खराब हो सकती है और साथ ही गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याएं भी हो सकती हैं। यह आरोप लगाया गया है कि बांधवगढ़ में हाथियों ने दूषित कोदो बाजरा या उसके उपोत्पादों का सेवन किया होगा, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जहर मिला होगा। माना जा रहा है कि फंगल संदूषण से उत्पन्न मायकोटॉक्सिन से हाथियों की मौत हुई है। एनजीटी ने इस तरह के व्यापक प्रभावों के बारे में चिंता व्यक्त की है। उसने कहा कि इससे वन्यजीवों और पशुधन दोनों को खतरा हो सकता है जो दूषित फसल के संपर्क में आ सकते हैं। एनजीटी ने यह भी कहा कि यह घटना संभावित रूप से वन संरक्षण अधिनियम, 1980 और पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 का उल्लंघन हो सकती है, जो महत्वपूर्ण पर्यावरणीय अनुपालन मुद्दों को जन्म देती है। ट्रिब्यूनल ने मामले को स्वतः संज्ञान लेने के अपने अधिकार पर जोर दिया। इसके लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय के नगर निगम ग्रेटर मुंबई बनाम अंकिता सिन्हा और अन्य (2021 एससीसी ऑनलाइन एससी 897) के मामले में फैसले का हवाला दिया। अपने आदेश के हिस्से के रूप में, एनजीटी ने राज्य और केंद्र सरकार के अधिकारियों को अगली सुनवाई से कम से कम एक सप्ताह पहले ट्रिब्यूनल की केंद्रीय क्षेत्रीय पीठ के समक्ष हलफनामे के रूप में अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। ट्रिब्यूनल ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि कोई प्रतिवादी अपने कानूनी वकील की सलाह के बिना जवाब दाखिल करता है, तो उसे ट्रिब्यूनल की सहायता के लिए वर्चुअली उपस्थित रहना होगा। यह मामला भोपाल में केंद्रीय क्षेत्रीय पीठ के अधिकार क्षेत्र में होने के कारण इस पीठ को स्थानांतरित कर दिया गया था। मूल केस रिकॉर्ड को तद्नुसार अग्रेषित करने का निर्देश दिया गया था।

प्रकाश पर्व पर मुख्यमंत्री ने गुरुद्वारे पर टेका मत्था

कहा-गुरु नानक जी की शिक्षा और संदेश युगों-युगों तक हमारा मार्गदर्शन करेंगे

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरू नानक जयंती के अवसर पर अरेरा कॉलोनी स्थित गुरुद्वारे में मत्था टेका और सिख संगत को गुरू नानक जयंती की बधाईयां दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का सिख समुदाय की ओर से सरोपा पहनाकर पुष्पहार से स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि समाज में भाईचारे और सबकी चिन्ता करने वाले, सबको एक साथ लेकर चलने वाले और लोगों में समानता का भाव जगाने वाले गुरू नानक जी का जब हम स्मरण करते हैं तो मन प्रफुल्लित हो उठता है। सच्चे अर्थों में उनके संदेशों पर अमल करने वाले एवं उन्हें आत्मसात करने वाले लोग दुनिया के 200 से अधिक देशों में निवासरत हैं और उनकी अच्छाईयों और उनके संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण मानवता के लिए समरसता एवं विश्व बंधुत्व का मार्ग प्रशस्त करने वाली उनकी शिक्षा और संदेश युगों-युगों तक हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरू नानक देव जी ने अत्याचार एवं समाज की कुरीतियों के खिलाफ बुलंद आवाज उठाई। गुरू

नानक देव जी के संदेशों को लोगों ने अंगीकार किया। उन्होंने विशेष रूप से माताओं और बहनों को साथ लेकर चलने और विदेशी आक्रमण की बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए समाज को एक साथ खड़ा किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरुग्रंथ दरबार से बाहर निकल कर गुरुद्वारा परिसर स्थित निशान साहिब को नमन किया। निशान साहिब ध्वज स्तंभ पर फूल माला अर्पित कर मत्था टेका। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र सलूजा, श्री सुरेंद्र सिंह अरोरा, श्री सुखवीर सिंह, श्री राहुल कोठारी एवं महिला सेवा मंडल की ओर से सुश्री इंद्रजीत कौर संधू, सुश्री कमलजीत कौर सलूजा, सुश्री गुरलीन खनूजा, सुश्री प्रेमजीत कौर, सुश्री जगमीत कौर एवं सिख समुदाय के लोग भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों को गुरू नानक जयंती और प्रकाश पर्व पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रकाश पर्व प्रदेश में धूमधाम और भव्यता के साथ आयोजित करें। मुख्यमंत्री ने प्रकाश पर्व के अवसर पर सिख समुदाय को 17 नवम्बर को मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित भी किया।

मप्र में 1.95 लाख महिलाएं बनेंगी बीजेपी की बूथ समिति में मेंबर

भोपाल की अर्चना गोस्वामी बनी पहली महिला अध्यक्ष, 20 नवंबर तक होंगे चुनाव

भोपाल। गुरुवार से मध्यप्रदेश में बीजेपी की बूथ समितियों के चुनाव शुरू हो गए हैं। 20 नवंबर तक प्रदेश के 65015 बूथों पर बूथ समितियों का गठन होगा। इन बूथ समितियों में 1 लाख 95 हजार महिलाओं को शामिल किया जाएगा। बूथ के चुनाव भी बीजेपी डिजिटल मोड पर करा रही है। यानि बूथ समिति के चुनाव की प्रक्रिया को पूरा करने के बाद बूथ अध्यक्ष से लेकर बूथ समिति की जानकारी संगठन एप पर तुरंत दर्ज कराई जा रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा भोपाल में हुजूर विधानसभा के डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी नगर कोलार मंडल के दानिश हिल्स क्लब हाउस, वार्ड-80 के बूथ क्रमांक-223 पर बूथ संगठन पर्व की शुरुआत कर खुद पन्ना प्रमुख बने। वीडी शर्मा की मौजूदगी में मध्यप्रदेश में इस बार के संगठन चुनाव में अर्चना गोस्वामी पहली बूथ अध्यक्ष चुनी गईं। अर्चना के साथ 11 पदाधिकारियों और सदस्यों को सहमति से चुना गया। पन्ना प्रमुख बनने के बाद भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि, मैं आज गर्व महसूस कर रहा हूं कि मुझे मेरे बूथ पर पन्ना प्रमुख की भूमिका मिली है। मैं सभी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर इस क्षेत्र को और मजबूती प्रदान करने की कोशिश करूंगा जो हमेशा भाजपा के साथ रहा है। संगठन पर्व के पहले चरण को कार्यकर्ताओं ने पूरे जोश के साथ मनाया। दूसरे चरण में भी यह जोश कायम रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। भारतीय जनता पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र है। इसलिए पूरी पारदर्शिता के साथ संगठन चुनाव संपन्न होते हैं। बीजेपी की बूथ समिति में एक बूथ अध्यक्ष के साथ कुल 12 सदस्य होंगे। इनमें तीन महिलाएं होंगी। बीजेपी ने बूथ समितियों के चुनाव के लिए चुनाव अधिकारी नियुक्त किए हैं। इन्हें संगठन पर्व सहयोगी नाम दिया है। शक्ति केन्द्र स्तर पर संगठन सहयोगी यानि चुनाव अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। ये अपने शक्ति केन्द्र में आने वाले बूथों पर जाकर पार्टी की सदस्य लेने वाले सदस्यों की बैठक लेंगे और उनमें से बूथ समितियों के लिए नामों का चयन कराएंगे। बूथ अध्यक्ष के अलावा 5 और सदस्य सोशल मीडिया और टेक्निक फ्रेंडली होंगे। यानि वे सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने के साथ ही मोबाइल और एप पर डेटा एंट्री करने में सक्षम हों।

बूथ अध्यक्ष के मोबाइल पर आएगा ओटीपी

बूथ समितियों के चुनाव प्रक्रिया को तुरंत डिजिटलाइज करने के लिए बूथ अध्यक्ष का चयन होने के बाद उनके नाम की एंट्री संगठन एप पर की जाएगी। जानकारी दर्ज होने के बाद नवनियुक्त बूथ अध्यक्ष के मोबाइल पर ओटीपी आएगा। ओटीपी वैरिफिकेशन के बाद अधिकारिक रूप से बूथ अध्यक्ष की जानकारी बीजेपी के पोर्टल पर दर्ज मानी जाएगी। नवंबर महीने में बीजेपी की बूथ समितियों के गठन के बाद दिसंबर महीने में मंडल अध्यक्ष और जिला अध्यक्षों के चुनाव होंगे। मंडल और जिला अध्यक्षों के चुनाव से पहले पार्टी सदस्यता अभियान में अच्छा काम करने वाले अध्यक्षों की भी लिस्ट तैयार करा रही है। सदस्यता में अच्छा काम करने वाले पदाधिकारी अगली समिति में प्रमोट किए जाएंगे। शक्ति केन्द्र स्तर के कार्यकर्ता मंडल और मंडल में अच्छा काम करने वाले जिले की टीम में शामिल किए जा सकते हैं।

34000 पेंशनधारियों को झटका, बंद होगी पेंशन

- ई केवाईसी नहीं करवाने वाले पेंशनधारियों के लिए बुरी खबर
- 34000 लोगों की रुक सकती है पेंशन,एक्शन मोड में निगम

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के नगर निगम के सर्वे में एक बड़ा खुलासा हुआ है। इसके हिसाब से राजधानी के हजारों लाभार्थियों की सामाजिक पेंशन योजना बंद हो सकती है। प्रदेश का सामाजिक न्याय एक दर्जन योजनाओं में विभिन्न तरह की पेंशन मुहैया कराता है। इसके राजधानी में ही लगभग 83000 हितग्राही हैं। जब मामला इन लोगों की ई-केवाईसी पर पहुंचा तो 50 हजार लोग इसे पूरा करवा पाए। प्रशासन ने समय समय पर ई केवाईसी को लेकर लोगों से अपील की है। पर घर घर सर्वे होने के बाद मामला कुछ और सामने आ गया है। लगभग 34 हजार लोग ऐसे हैं, जिनकी ये ई केवाईसी नहीं है। बीएमसी के सर्वे ने कई खुलासे किए। जो योजनाओं की फजीहत करने वालों को सामने लाकर खड़ा कर देता है। सर्वे के दौरान पता चला कि ये लोग एक से ज्यादा योजना का फायदा ले रहे हैं। वहीं कई लोग योजना के पात्र भी नहीं है। इसके साथ ही कुछ लोग तो भोपाल शहर में रह भी नहीं रहे हैं। लोगों को नींद से जगाकर प्रशासन के द्वारा अपने अधिकारी को पाने का आखिरी मौका दिया जा रहा है। जिन लोगों ने अभी तक ई-केवाईसी नहीं कराई है उन्हें एक आखिरी मौक़ा देने के लिए नगर निगम अलग-अलग वार्डों में शिविर लगा रहा है। लोग अपने नज़दीकी वार्ड कार्यालय में जाकर आधार कार्ड और ज़रूरी दस्तावेज़ों के साथ ई-केवाईसी करवा सकते हैं। इस मामले में सबसे ज्यादा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के 33 हजार से ज्यादा हितग्राही हैं। फिर दिव्यांग शिक्षा प्रोत्साहन योजना के 1917 और सामाजिक सुरक्षा दिव्यांगता पेंशन योजना के 5 हजार 890 लाभार्थी शामिल हैं। बहुदिव्यांगता/मानसिक रूप से दिव्यांगों के लिए सहायता में 2 हजार 860, मुख्यमंत्री सामाजिक सुरक्षा कल्याणी पेंशन योजना में 13 हजार 825 सहित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना में 21 हजार 297 और सामाजिक सुरक्षा वृद्धाश्रम पेंशन योजना में 42 हितग्राही शामिल हैं। इसके अलावा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विकलांग पेंशन योजना में 1 हजार 443, मुख्यमंत्री अविवाहित पेंशन योजना में 71, कन्या अभिभावक पेंशन योजना में 192, विधवा-परित्यक्ता पेंशन योजना में 631 और सामाजिक सुरक्षा वृद्धावस्था पेंशन योजना में 2725 लाभार्थी शामिल है।

प्रदेश में रातें हुईं ठंडी, तापमान में दो डिग्री से अधिक हुई गिरावट

भोपाल। प्रदेश में उत्तर भारत से आ रही बर्फीली हवाओं के कारण रातें ठंडी होने लगी है। तापमान में दो डिग्री से अधिक की गिरावट हुई है। वहीं भोपाल में इस सीजन का सबसे कम न्यूनतम तापमान 13.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

भोपाल समेत पचमढ़ी, सिवनी, जबलपुर में ठंड बढ़ने लगी है। गुरुवार सुबह भोपाल, ग्वालियर और नर्मदापुरम में धुंध छाई। यहां की दृश्यता सुबह साढ़े पांच बजे 500 मीटर से भी कम थी। जो सुबह साढ़े आठ बजे एक से दो हजार मीटर रही। सिवनी में रात का तापमान सामान्य से 3.6 डिग्री सेल्सियस तक कम रहा, जो 15.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

मौसम विज्ञानी अजय शुक्ला ने बताया कि

प्रदेश के सभी संभाग के जिलों में दिन और रात के तापमान में कमी आई है। अधिकतम तापमान की अपेक्षा न्यूनतम तापमान में गिरावट अधिक हुई है। सिस्टम की बात करें तो पाकिस्तान और उसके आसपास हवा के ऊपरी भाग में एक चक्रवात बना हुआ है। साथ ही एक द्रोणिका भी है। इसके प्रभाव से प्रदेश के तापमान में गिरावट हो रही है।

भोपाल का न्यूनतम तापमान फिलहाल 13-14 डिग्री के आसपास रहेगा। अभी एक पश्चिमी विक्षोभ पास होगा। उसके बाद प्रदेश के तापमान में और अधिक गिरावट होगी। पिछले चौबीस घंटों के दौरान ग्वालियर, शहडोल संभाग के जिलों में तापमान सामान्य से अधिक रहे। सर्वाधिक अधिकतम तापमान खजुराहो में 33.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं सबसे कम न्यूनतम तापमान पचमढ़ी में 8.8 डिग्री दर्ज किया गया। प्रदेश में अगले 24 घंटों के दौरान तापमान में गिरावट होगी और मौसम शुष्क रहेगा।